शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 3 अंक 11 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 जुलाई 2019

मुख्य संपादक

डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक

प्रो.सती.के

डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा

श्रीमती वनजा.पी

संपादक मंडल

प्रो.एस.कमलम्मा

डॉ.जी.गीताकुमारी

डॉ.बिन्दु.सी.आर

डॉ.षीना.यू.एस

डॉ.सुमा.आई

डॉ.एलिसबत्त जोर्ज

डॉ.लक्ष्मी.एस.एस

डॉ.धन्या.एल

डॉ.कमलानाथ.एन.एम

डॉ.अश्वती.जी.आर

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय	:		3
डॉ.एन ई विश्वनाथ अय्यर : दक्षिण के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार	:	डॉ.टी.एन. विश्वंभरन	7
ललित लेखन की चारुता	:	डॉ.ए.अरविन्दाक्षन	9
झाँकियाँ उत्तर दक्षिण की	:	डॉ.के.जी.प्रभाकरन	12
स्मृतियों में डॉ.एन.ई विश्वनाथ अय्यरजी	:	प्रो. डी. तंकप्पन नायर	15
पुण्य कृती आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर	:	डॉ.जे.रामचन्द्रन नायर	17
सारस्वत साधक डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर	:	डॉ.एस.तंकमणि अम्मा	19
आचार्य विश्वनाथ अय्यरजी की सारस्वत साधना	:	डॉ.एन.जी.देवकी	25
मेरे गुरुवर की यादों में	:	प्रो.(डॉ) सुधा बालकृष्णन	28
हिन्दी साहित्य साधक डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी	:	डॉ.उमा कुमारी.जे	30
आदरणीय गुरुवर विश्वनाथ अय्यरजी	:	एस.विजय कुमार	37
'आ जा रे परदेसी' में कोचीन का परिदृश्य	:	प्रो.उषा.बी.नायर	39
मेरे गुरुवर	:	डॉ.पी.लता	41
ज्ञान-गठरी के अविश्रांत साधक	:	डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा	42
आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर - स्मृतिचित्र	:	डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन	44
डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर - केरल का अग्रगण्य हिंदी लेखक	:	अधिवक्ता मधु. बी	47
निबंधकार डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी	:	डॉ.रंजीत रविशैलम	48

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मैलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ डी.वी.सुरेख ई.एन फोण्ट में वर्ड या पेजमेकर फाइल में भेजें। रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता भी अंकित करें। संक्षिप्त जीवन-परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक

डॉ.पी.लता

शोध सरोवर पत्रिका

मूल्य : एक प्रति रु. 30/-

वार्षिक शुल्क रु.120/-

सहकर्मी पुनरवलोकन समिति :

डॉ.एच.परमेश्वरन

डॉ.टी.के.नारायण पिल्लै

डॉ.के.श्रीलता

पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें - डॉ.पी.लता (संपादक, शोध सरोवर पत्रिका; मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी), 'आरती', टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफीस लेन, ई-28, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य। फोन : 0471 - 2332468, 9946253648

ई-मेल : akhilbharatheeyhindiacademy@gmail.com

वेबसाइट : www.shodhsarovarpatrika.co.in

संपादकीय

डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यरः बहुआयामी व्यक्तित्व

डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे बहुभाषा (हिन्दी, तमिल, मलयालम, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी) पंडित, विख्यात साहित्यकार (मौलिक तथा अनूदित), सफल अध्यापक, रसिक एवं विद्वत्तापूर्ण वाग्मी, पैनी दष्टिवाले शोधकर्ता तथा शोध निदेशक थे।

अय्यरजी का जन्म केरल राज्य के पालक्काट जिले के नूरणि नामक गाँव में सन् 1920 में हुआ।

गाँव के हाईस्कूल में संस्कृत भाषा तथा साहित्य के अध्ययन के साथ उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। केरल के हिन्दी प्रचार आन्दोलन से प्रभावित अय्यरजी हिन्दी के अध्ययन में लग गये। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाएँ उन्होने उत्तीर्ण कीं। सन् 1936 में महात्मा गाँधी के कर- कमलों से राष्ट्रभाषा परीक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त करने का सुयोग उन्हें पाप्त हुआ। यह उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना रही और इस घटना से उन्हें हिन्दी का अध्ययन ज़ारी रखने की प्रेरणा मिली। मद्रास विश्वविद्यालय से संस्कृत में तथा काशी विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए की उपाधियाँ प्राप्त कीं। सन 1959 में 'आधुनिक हिन्दी और मलयालम काव्य' विषय पर शोध - कार्य करके आय्यरजी ने सागर विश्वविद्यालय से पी एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। अपने शोध निर्देशक श्री नन्ददुलारे वाजपेयी का विशेष स्नेह पात्र रहने का भाग्य भी सागर विश्वविद्यालय के इस प्रथम दक्षिणात्य शोध- छात्र को पाप्त हुआ।

अय्यरजी सन् 1940 में तिरुवनन्तपुरम के एक विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हुए। एम. ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने केरल के विभिन्न स्नातक तथा स्नातकोत्तर कॉलेजों में अध्यापन का कार्य किया। अय्यरजी सन् 1963 में केरल विश्वविद्यालय के 'स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन केन्द्र, एरणाकुलम' के प्राध्यापक बने। सन् 1971 में यह केन्द्र कोच्चिन विश्वविद्यालय के अधीन आ गया तो डॉ.अय्यर उसके प्रथम आचार्य और अध्यक्ष बने।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन होकर अय्यरजी ने इस विभाग के सर्वांगीण विकास केलिए जी-जान से प्रयत्न किया। कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग तथा पुस्तकालय को आज जो मान्यता प्राप्त है, उसके मूल में अय्यरजी की कर्मठता तथा अपूर्व संगठन-क्षमता का बड़ा हाथ रहा है। उन्होंने वहाँ एम.ए (हिन्दी) पाठ्यक्रम शुरू किया तथा इस विभाग को एम.फिल (हिन्दी) तथा पी एच.डी (हिन्दी) का शोध केन्द्र भी बनाया। आधुनिक युग में अनुवाद की बढ़ती माँग से अवगत होकर उन्होंने हिन्दी में 'अनुवाद डिप्लोमा पाठ्यक्रम' भी प्रारंभ किया।

बीच - बीच में कार्यशालाओं, संगोष्ठियों व नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन करके वे केरल में हिन्दी अध्ययन -अध्यापन को नूतन दिशा- निर्देश करते रहे। इस सिलसिले में उन्होंने उत्तर भारत के हिन्दी साहित्यकारों व विद्वानों को केरल में आमंत्रित करके उनके दर्शन व भाषण का लाभ उठाने का मौका केरल के हिन्दी प्रेमियों को दिया। नौ साल तक डॉ.अय्यर कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी

विभाग के अध्यक्ष रहे। इस दौरान उन्होंने कई पी एच.डी. के छात्रों को सफलतापूर्वक शोध-निर्देशन किया। वे केरल विश्वविद्यालय के भी शोध निर्देशक रहे। 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' के तत्वावधान में उत्तर भारत के कई विश्वविद्यालयों में अतिथि-भाषण देने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ। अपने प्रौढ़, गंभीर, रसीले तथा विद्वत्तापूर्ण भाषण द्वारा पाठकों को आकर्षित करने की क्षमता अय्यरजी की विशेषता है। सन् 1980 में कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य व अध्यक्ष - पद से सेवानिवृत्त हुए तो अय्यरजी सपरिवार तिरुवनन्तपुरम आये और तिरुवनन्तपुरम में स्थायी रूप से रहे। 6-10-2006 को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अलमेलू स्वर्गस्थ हुईं और 7-03-2014 को अय्यर जी भी।

कोच्चिन विश्वविद्यालय में अध्यापन - कार्य करते वक्त उनकी क्रांतदर्शिता का फल है 'अनुशीलन' नामक विभागीय वार्षिक शोध पत्रिका। कोच्ची में 'केरल हिन्दी साहित्य मंडल' की स्थापना हुई तो उसके पीछे अय्यरजी का परिश्रम ज़्यादा है। इस संस्था की मुखपत्रिका के रूप में 'साहित्य मंडल पत्रिका' का प्रकाशन भी अय्यरजी की कर्मठ बुद्धि की देन है। उन्होंने पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही साथ अनेक हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकारों को इस पत्रिका में लिखने की प्रेरणा भी दी। इस पत्रिका के प्रथम मुख्य संपादक डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर ही थे। इस पत्रिका में अय्यरजी के 'संपादकीय लेख' केरल के ही नहीं, उत्तर भारत के हिन्दी विद्वानों के बीच भी चर्चित रहे।

'केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम' के तत्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित किये जानेवाले 'राज्य स्तरीय हिन्दी पखवाड़ा समारोह' के मुख्य संयोजक की भूमिका डॉ.अय्यर ने कई साल निभायी। अक्तूबर 1991 में भारत भवन, भोपाल द्वारा आयोजित 'हिन्दी - मलयालम रचनाकार शिविर' की सफलता का मुख्य कारण अय्यरजी की संगठन-कुशलता है।

अपनी हिन्दी सेवा तथा साहित्य-सेवा केलिए अय्यरजी केन्द्र सरकार तथा विविध राज्य सरकारों से कई बार पुरस्कृत व सम्मानित हुए। संतरा नगरी में नागरपुर विद्यापीठ के विशाल प्रांगण में 10 जनवरी 1975 को आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में श्रेष्ठ हिन्दी सेवा केलिए उन्हें विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ। मोरिशस (महात्मागाँधी संस्थान, पोर्टुलुइस) में संपन्न 'द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन' (28- 30 अगस्त 1976) तथा लंदन में संपन्न 'छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन' (14-18 सितंबर 1999) में वे भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भाग ले सके। अपनी विविध रचनाओं केलिए अय्यरजी विविध सरकारों तथा संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हुए। जैसे- नातालि पुरस्कार (भारतीय अनुवाद परिषद), आचार्य आनंद ऋषि साहित्य पुरस्कार (हैदराबाद), सौहृद पुरस्कार (उत्तर प्रदेश सरकार), राज्य स्तरीय राजभाषा पुरस्कार (बिहार सरकार), राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान), माता कुसुम कुमारी पुरस्कार (नज़ीबाबाद साहित्य पुरस्कार), अनुवाद पुरस्कार (साहित्य अकादमी, दिल्ली), हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्य पुरस्कार (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय), 'व्यावहारिक अनुवाद' नामक मौलिक शिक्षा ग्रंथ केलिए शिक्षा विभाग, भारत सरकार का पुरस्कार आदि। सन् 2006 में 'हिन्दी पखवाड़ा समारोह' के सिलसिले में 'गुरुपूजा' कार्यक्रम में 'हिन्दी विद्यापीठ, केरल' में अय्यरजी सम्मानित हुए। मार्च 2008 में 'साहित्य वाचस्पति' मानद उपाधि देकर 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' ने उनका आदर किया।

पत्नी - स्व.श्रीमती अलमेलु अम्माळ; सन्तानें - (1) श्रीमती जयन्ती और (2) श्रीमती उषा।

डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर का सृजन-कार्य

वैविध्यापूर्ण है। सन् 1948 के लगभग उनके साहित्य-जीवन का श्रीगणेश हुआ। उनका 'होनहार बालक तथा अन्य कहानियाँ' शीर्षक कहानी-संकलन सन् 1948 में प्रकाशित हुआ। 1949-50 के दौरान स्वतंत्र हिन्दी बोधिनी, हिन्दी रचना मित्र, अनुवाद चन्द्रिका, अनुवाद मंजरी जैसे हिन्दी स्वयंशिक्षकों, व्याकरण व अनुवाद-अभ्यासवाले ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।

सन् 1959 में अय्यरजी के 'मलयालम-हिन्दी व्यावहारिक कोश' का प्रकाशन हुआ। सन् 1960 के बाद विविध शोध-प्रबंधों की रचना की; जीवनियाँ व ललित निबंध लिखे; साथ ही साथ शोध-कार्य में भी लगे रहे। जैसे-

राष्ट्रभारती को केरल का योगदान (1970), केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार (1963) आदि डॉ. अय्यर की सूक्ष्म एवं स्वच्छ शोध -दृष्टि के परिचायक ग्रंथ हैं। इनमें 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' केरल में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा केरल के हिन्दी लेखकों का परिचय देनेवाला ग्रंथ है। 'केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार' में तिरुवितांकूर के महाराजा गर्भश्रीमान स्वातितिरुनाल रामवर्मा (1818-1849) के हिन्दी गीतों का परिचय मिलता है। 'केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास' (1996) उनकी एक श्रेष्ठतम कृति है। पाँच खंडों में विभक्त प्रस्तुत कृति के खंड निम्नलिखित हैं- खंड 1- केरल एवं हिन्दी भाषा, खंड 2- हिन्दी प्रचार, खंड 3 - हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण, खंड 4 - उच्चतर हिन्दी अध्ययन एवं शोध, खंड 5 - केरल में मौलिक और अनूदित हिन्दी साहित्य; हिन्दी पत्रिकाएँ आदि। 'तुलनात्मक साहित्य' (2004) अय्यरजी की बहुचर्चित कृति है। इसमें तुलनात्मक साहित्य संबन्धी अवधारणा, तुलना के प्रमुख तत्व,तुलनात्मक साहित्य का महत्व आदि पर प्रकाश डालते हुए बहुभाषा भाषी भारत देश में तुलनात्मक साहित्य तथा तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। यह ग्रंथ सिद्धांत खंड, दृष्टांत खंड आदि दो खंडों में विभक्त है।

डॉ.अय्यर द्वारा लिखित जीवनियाँ हैं- 'महाकवि रवीन्द्रनाथ' (इसमें कवीन्द्र रवीन्द्र की जीवनी है।) और 'विज्ञान योगिनी' (इसमें विज्ञान तथा मानव केलिए तन-मन-धन से समर्पित माडम क्यूरी की जीवनी है।)

'अभयकुमार की आत्मकहानी' नामक रचना आत्मकथा के क्षेत्र में अय्यरजी का नया प्रयोग है। अभयकुमार एक टूरिस्ट बस है, जिसकी आत्मकहानी के द्वारा लेखक ने अपने घुमक्कड़ जीवन के विविध प्रसंगों को जीवंत बनाया है। अय्यरजी का यायावरी व्यक्तित्व इस रचना में उभरकर आता है। सहृदय पाठक को, केरल भर परिक्रमा कराने में यह कृति समर्थ है। इस रचना को गुलाबराय पुरस्कार (आगरा) प्राप्त हुआ।

'ललित निबंध' एक सशक्त गद्य-विधा है, जो अय्यरजी की प्रिय साहित्य-विधा भी है। अय्यरजी की सृजनात्मक प्रतिभा ललित निबन्ध-लेखन में अधिक चमक उठी है। लालित्य, भाव- तीव्रता, प्रवाहपूर्ण भाषा -शैली आदि उनके ललित निबन्धों की विशेषताएँ हैं। उनके निबन्धों में केरल की मिट्टी की गन्ध है। उनके पाँच ललित निबन्ध-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'शहर सो रहा है' (1975), 'उठता चाँद डूबता सूरज' (1984), 'फूल और काँटे' (1992), 'सीढ़ी और साँप' (1996), 'घने केर तरु तले' (2005) आदि।

डॉ.अय्यर अव्वल दर्जे के अनुवादक हैं। हिन्दी से मलयालम में तथा मलयालम, तमिल आदि भाषाओं

से हिन्दी में कई कृतियों का सफल अनुवाद उन्होंने किया है। अनुवाद हैं - मलयाट्टूर रामकृष्णन के 'जड़ें' उपन्यास का अनुवाद 'वेरुकल', पारप्पुरम् के 'अरनाष़िकनेरम्' उपन्यास का अनुवाद 'आधी घड़ी', सी.वी.रामन पिल्लै के 'रामराज बहादुर' उपन्यास का उसी नाम से अनुवाद, आनन्दन के 'मरण सर्टिफिकट' उपन्यास का उसी नाम से अनुवाद, पुनत्तिल कुञ्ञब्दुल्ला के 'मरुन्नु' उपन्यास का अनुवाद 'दवा', पुनत्तिल कुञ्ञब्दुल्ला के 'स्मरक शिलकल' उपन्यास का अनुवाद 'स्मारक शिलाएँ', टी.पद्मनाभन के 'मञ्ञुपोलोरु पेण्कुट्टी' कहानी संकलन का अनुवाद 'एक किशोरी फुलझड़ी-सी', श्रीमती कुलकर्णी द्वारा लिखित महात्मागाँधी की जीवनी 'अमूल्य पैतृकम्' का अनुवाद 'अनमोल विरासत' (सहलेखन), भालचन्द्र नेमाड़े द्वारा लिखित 'तुकाराम' (जीवनी; अंग्रेज़ी में) का उसी नाम से हिन्दी अनुवाद, ओ.एन.वी.कुरुप की फुटकल कविताओं का अनुवाद 'ओ.एन.वी.कुरुप की कविताएँ', ओ.एन.वी.कुरुप की काव्याख्यायिका 'उज्जयिनी' का उसी नाम से अनुवाद आदि। अनुवाद - चिन्तन सबन्धी अय्यरजी की रचनाएँ हैं- 'अनुवाद कला', 'अनुवाद : भाषाएँ और समस्याएँ', 'व्यावहारिक अनुवाद' आदि।

'केरल ज्योति' (केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम की मुख पत्रिका) के कई अंकों में 'सारस्वत प्रदक्षिणा' नामक स्तंभ प्रकाशित होता था। 'सारस्वत प्रदिक्षिणा' लिखने का कारण, उसका ऐसा शीर्षक आदि के बारे में अय्यरजी का मत उन्हींके शब्दों में देखिए- "मेरी प्रिय पूर्व छात्रा डॉ. पी. लता ने मेरी 'सारस्वत प्रदक्षिणा' की लेखमाला की भूमिका जब माँगी तभी उसके बारे में सोचना शुरू किया। कोच्चिन विश्वविद्यालय के सेवाकाल में विभिन्न प्रकार के स्फुट लेख लिखता था। कभी ललित निबंध लिखता, कभी संस्मरण। 'केरल ज्योति' और 'साहित्य मंडल पत्रिका' मेरी अपनी पत्रिका के समान थीं। मेरा लेख प्रायः उनमें प्रकाशित होता। ललित निबंध और संस्मरण की कई कड़ियाँ समाप्त करने के बाद कुछ नई चीज़ लिखने की इच्छा हुई। इसी दौरान 'भारतीय भाषा परिषद, कोलकत्ता' ने अपने प्रकाशन 'भारतीय उपन्यास-सार' केलिए मलयालम के चुने दस उपन्यासों का सार माँगा था, लेखक के संक्षिप्त परिचय सहित। वह सेवा बड़ी रोचक और यज्ञसाध्य रही। इसका अनुभव मन में जमा रहा। विभाग में मुझे कई स्रोतों से अच्छी-अच्छी नई पुस्तकें मिलती थीं। उन्हें पढ़ने के बाद सोचता था कि अन्य पाठकों केलिए इनका आस्वादन क्यों संक्षेप में न लिखूँ। पाठक इन ग्रंथों से परिचित हो सकते थे। आगे वे स्वयं ये पुस्तकें पढ़ सकते थे। यह खयाल अच्छा लगा। संयोग से मैं उन दिनों दिल्ली गया। वहाँ 'साहित्य अकादमी' में श्री गिरिधर राठी ने कुछ अच्छे अनूदित उपन्यास दिये। कुछ पुरस्कृत भी थे। लिखने की योजना बनी तो 'केरल ज्योति' के तत्कालीन संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने योजना को सराहा और 'केरल ज्योति' में छापने तैयार हुए। इस माला का स्वरूप-निर्धारण करना था। मेरे सामने मलयालम की 'साहित्यवारफलम्' नामक साप्ताहिक समीक्षामाला थी। इसके लेखक थे स्व. प्रो. एम. कृष्णन नायर। वे बहुश्रुत थे। अपनी लेखनी से तूफ़ान मचाते थे। साहित्यकार उनसे आतंकित रहते थे। मैं तो केवल ग्रंथ का परिचय व आस्वादन कराना चाहता था। इसलिए मैंने अपनी लेखमाला का शीर्षक 'सारस्वत प्रदक्षिणा' दिया।"

यों बहुआयामी साहित्यिक व्यक्तित्ववाले आदर्णीय गुरुवर को कोटि-कोटि प्रणाम।।

डॉ.पी.लता

संपादक

डॉ.एन ई विश्वनाथ अय्यर : दक्षिण के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार

• डॉ.टी.एन.विश्वंभरन

मुझे आश्चर्य होता है, क्यों डॉ.एन ई विश्वनाथ अय्यर 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' से, जिसने हिंदी के प्रचार की भूमिका तैयार की, नहीं जुड़े हुए थे? 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के महा सचिव वेंकटेश्वर जी से वे परिचित थे। केरल के महान हिंदी प्रचारक प्रो.ए.चद्रहासन, डॉ.पी.के केशवन नायर, प्रो.आई. वेलायुधन, प्रो.आर.के.राव जैसे व्यक्तियों से ही नहीं छोटे-छोटे हिंदी प्रचारकों से भी उनका निकट का संबंध था। फिर भी इतनी बड़ी हिंदी की संस्था के दिन प्रति दिन के संपर्क में आना वे नहीं चाहते थे। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा से उनका कोई विरोध नहीं था। यह मेरा अनुमान है कि वे हिंदी के प्रचार में नहीं, हिंदी के साहित्यिक वर्चस्व में ध्यान दिया करते थे। महात्मा गाँधी के शिष्य पंडित देवदूत विद्यार्थी के कोचिन में पदार्पण करने के उपरान्त केरल के हिंदी के वातावरण में जो भारी परिवर्तन होता रहा उससे अय्यर जी परिचित थे। इसलिए दक्षिण के मूर्द्धन्य हिंदी विद्वान एवं हिंदी के जानकार के रूप में वे इतिहास में अंकित किये गये हैं। केरल हिंदी साहित्य मंडल के पुरोधा के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास में उनका नामोल्लेख हुआ है जिसकी शुरुआत दिसंबर 1969 को कोचिन में हुई थी। डॉ.विश्वनाथय्यर उन दिनों केरल विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे।

मुझे अब भी याद है, डॉ.विश्वनाथअय्यर जी साउथ जंक्शन के त्रिभुवनसुंदरी होटल में पदार्पण कर रहे थे कि मुझ पर उनकी नज़र पड़ी। फरवरी 1968 के बाद पहली बार मैं उनके सामने आ गया था। मेरे मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। सन् 1966 में एम.ए पास हो जाने के बाद कोचिन के केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में पहली बार मुलाकात हुआ तो वे मुझे सुझाव देने लगे कि हिंदी का फुल टाइम शोध छात्र बन जाओ। चूँकि मुझे नौकरी की सख्त ज़रूरत थी और थेवरा एस.एच कालेज के हिंदी लेक्चरर के पद पर मेरी नियुक्ति हो जाने की संभावना थी इसलिए मुझे उनका सुझाव स्वीकार्य नहीं हुआ। सन् 1966 से मैं मलयालम के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त युवापीढ़ी के अंतर्गत था। मेरे कहानी लेखन तथा नाट्य लेखन के बारे में वे जानते भी थे। होटल में बैठे-बैठे चाय पी रहे थे तो उन्होंने कहा- "अच्छा हुआ कि कोचिन सिटी में पदार्पण करते ही विश्वन वैट्टिला से मिले"।

उन्होंने अपने आगमन पर बात की। वे 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' आये हुए थे। वे बोले - 'तुम साथ आओ, सभा जाएँगे। हिंदी के विद्वान प्रचारकों ने एक सभा बुलायी है। के.एन.मेनन और के.आर.वारियर जैसे दो हिंदी प्रचारक हैं। वे हिंदी भाषा के प्रचार में ही नहीं हिंदी साहित्य के प्रचार में भी दिलचस्पी लेते हैं।'

विश्वनाथ अय्यर के साथ मैं सभा चल पड़ा। विश्वनाथ अय्यर की अध्यक्षता में सभा संपन्न हुई। के.एन.मेनन और के.आर.वारियर ने सभा क्यों बुलायी है इस पर प्रकाश डाला। विश्वनाथ अय्यर ने उन दोनों महानुभावों की भूरी प्रशंसा की। आगे बताया कि हिंदी का प्रचार काफी अच्छा हुआ है। अब तो सभाओं के हिंदी प्रचारकों ने हिंदी की जो भूमिका बनायी है उस पर भाषाई राष्ट्रीय संस्कृति का महल बनाना है। भाषा और भाषाई राष्ट्रीय संस्कृति पर केंद्रित था उनका आगे का भाषण।

धीरे-धीरे 'केरल हिंदी साहित्य मंडल' की स्थापना हुई। एन.ई.विश्वनाथ अय्यर अध्यक्ष पद पर आसीन हुए। के.एन.मेनन ने महासचिव की भूमिका संभाली; मैं उपसचिव का काम करने लगा। सभा में कार्यालय खोला गया। प्रतिदिन कलमश्शेरी से सायं को विश्वनाथ अय्यर आया करते थे। 'केरल हिंदी साहित्य मंडल' के प्रसंगानुकूल कार्यकलापों पर गंभीर से विचार-विमर्श होता रहा। शाम को सात बजे तक विचार-विमर्श होता रहा। हिंदी साहित्य के प्रति केरल के हिंदी के छात्रों तथा आध्यापकों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए प्रतिमास साहित्यिक चर्चा का आयोजन करने का निर्णय हुआ। आँध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु जैसे अहिंदी प्रदेशों के हिंदी वातावरण से भिन्न वातावरण केरल में सृजने में यह निर्णय सहायक सिद्ध हुआ। केरल तथा अन्य अहिंदी प्रदेशों के हिंदी साहित्यकारों की सृजन-प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का प्रयास अगले चरण में प्रारंभ हुआ। 'केरल हिंदी साहित्य मंडल' ने एक प्रकाशन विभाग की स्थापना की। उसका प्रारंभ हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. नगेंद्र के द्वारा हुआ। डॉ. नगेंद्र जैसे हिंदी विद्वानों से केरल के नये हिंदी वातावरण को परिचित कराने का ऐतिहासिक प्रयास डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर से हुआ। कुमारनाशान जन्मशताब्दी के सिलसिले में डॉ.विश्वनाथ अय्यर के संपादकत्व में महाकवि कुमारनाशान नाम से एक ग्रंथ तैयार हुआ था। उसका विमोचन दिल्ली में पारलमेंट हॉल में केंद्र साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. प्रभाकर माचवे के द्वारा संपन्न हुआ।

केरल के ही नहीं तमाम हिंदी की नयी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर जी का सुझाव था एक नयी पत्रिका का प्रकाशन। 'केरल हिंदी साहित्य मंडल' ने 'साहित्य मंडल पत्रिका' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन किया। पत्रिका का प्रथम संपादक डॉ.विश्वनाथ अय्यर थे। पूरे भारत में पत्रिका की स्वीकृति हुई तो हिंदी भाषा के नहीं हिंदी साहित्य के बड़े प्रचारक के रूप में पूरे भारत में वे विख्यात हुए।

♦पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय।

सूचना

NET (हिन्दी) तथा Spoken Hindi की कक्षाओं में प्रवेश पाने को इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें -

फोन : 9946253648, 0471 - 2332468

ललित लेखन की चारुता

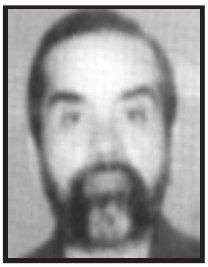

• डॉ.ए.अरविन्दाक्षन

अपनी कक्षाओं में तथा अपने भाषाणों में विश्वनाथ अय्यर अक्सर किस्सा-कहानियों का अवलंब लेते हैं। कोई हल्ला-सा प्रसंग, कोई न कोई घटना, कोई न कोई व्यक्ति उनके किस्सों में आ ही जाते हैं। वे अपने होंठों से नहीं, बल्कि हृदय से ये किस्से सुनाते हैं। उनमें वे रसलीन भी हो जाते हैं। मुख्य विषय से प्रथम दृष्टि में इन किस्सों का कोई गहरा रिश्ता दिखाई नहीं देता है। पर धीरे-धीरे ये किस्से मुख्य विषय से जुड़ते दिखाई देते हैं। उनके ललित लेखन की सृजनात्मक पृष्ठभूमि अति विस्तृत है। वे हमें सुनाते प्रतीत होते हैं। अक्सर वे पाठकों की संलग्नता के इच्छुक लगते हैं। वे अपने आप के कटघरे में कतई कैद नहीं हैं। आत्म का प्रसार ही उनके ललित लेखन की चारुता का मुख्य प्रतिमान है।

विश्वनाथ अय्यर के रचना-व्यक्तित्व में एक समावेशी पक्ष प्रबल है। इसलिए उनकेलिए कोई भी विषय प्रीतिजनक है। छोटे-छोटे प्रसंगों पर उन्होंने कई ललित रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। 'ललित निबंध' की रचनात्मकता को वे बलपूर्वक अपनी रचनाओं में प्रयुक्त नहीं करते हैं। उनकेलिए वह एक सहज-साध्य कार्य है। हिन्दी में 'ललित निबंध' एक विकसित विधा है। कई रचनाकार इस विधा में सक्रिय हैं। उन सब से भिन्न शैली का प्रयोग ही विश्वनाथ अय्यर करते दिखाई देते हैं। इसके कई कारण हैं। पहला है, उनकी समावेशी दृष्टि-संपन्नता। दूसरा है, जीवन के प्रति खुला मन। इस प्रवृत्ति को देखते समय अनीतावर्मा की एक पंक्ति याद आ रही है - 'जीवन मैं तुम्हारे भीतर से चलकर आती हूँ', ('एक जन्म में सब' शीर्षक संकलन की 'प्रार्थना' शीर्षक कविता से) 'जीवन के भीतर से चलकर आना' अनुभव - सत्यों की विराटता को दर्शाता है। तीसरा कारण है, हल्के प्रसंगों का लक्षित आदर्श व्यक्त मूल्यवान होता है। नक्षत्रों को लक्ष्य समझनेवाले रचनाकार के रूप में विश्वनाथ अय्यर को देखा जा सकता है। चौथा कारण है, कण-कण में सौंदर्य का अनुभव करना मामूली बात नहीं है। उसकेलिए एक दार्शनिक की दृष्टि आवश्यक है तथा एक निपट आदमियत की भी आवश्यकता है। तभी वह सौंदर्य का प्रतिस्पंदन सृजित कर सकता है। पाँचवाँ कारण है, अभूतपूर्व पारदर्शिता को रचना में बरतने की ताकत। प्रकृति का एक रमणीय दृश्य उसके विवरण तक सीमित नहीं होता है। उनके शब्द उस दृश्य से लंबी यात्रा शुरू करते हैं। तब एक रमणीय दृश्य सौंदर्यवर्द्धक दृश्य न रहकर जीवन-वर्द्धक दृश्य में परिणत होता है। इन कुछ रचनात्मक कारणों से विश्वनाथ अय्यर की ललित रचनाएँ हल्के - फुल्के जीवन-प्रसंगों से गंभीर जीवन प्रसंगों तक की अति दीर्घ यात्रा की प्रतीति होती हैं। वैचारिकता का घटाटोप कहीं भी नहीं है। वैचारिकता को यदि रेखांकित करना ही है तो उसमें मनुष्य केंद्रित दृष्टि तारों की तरह टिमटिमाते मिलती है।

विश्वनाथ अय्यर लंबे समय तक आचार्य पद पर कार्यालय रहे। लेकिन उसका महत्व अपनी सृजनात्मक प्रफुल्लता के कारण ही सिद्ध होता है। केरल के सर्वश्रेष्ठ मौलिक लेखक के रूप में वे हमारे सामने आते हैं। वैचारिक मंथत और लालित्य का समन्वय उनमें सदा देखने को मिलता है। इन पंक्तियों के लेखक को अब भी याद है कि वे कभी-कभी अपनी इस तरह की रचनाओं को प्रकाशन के पूर्व पढ़ने को देते थे। 'अरविन्द, तुम अपनी राय बता देना'। मैं पसोपेश में पड़ता क्योंकि मेरे सामने सवाल यह था कि क्या मैं उनकी रचना का आस्वादन कर पाऊँगा? जब यह दायित्व मेरे कंधे पर डाल दिया गया है तो उसको निभाना भी पड़ता है। दो-तीन बार मैं उनकी रचना को पूरी तरह से पढ़ डालता था। उस दौर में मैं कक्षा में अज्ञेय की लंबी कविता 'असाध्य वीणा' पढ़ाता या। उस कविता का प्रियंवद - प्रसंग मुझे सहारा देता था। प्रियंवद जिस तरह से असाध्य समझी गई वीणा का आस्वादन करता है - कविता में आस्वादन अपने आप में एक प्रदीर्घ प्रक्रिया है - उसी तरह मैं विश्वनाथ अय्यर की ललित रचना का आस्वादन करता रहा। मैं ने उनकी रचनाओं का विश्लेषण नहीं किया, बल्कि भरपूर मात्रा में उनका आस्वादन किया। दूसरे दिन अपने आस्वादन के वैविध्यमय धाराताल को मैं उनके सामने प्रस्तुत करता था। वे ध्यान से सुनते। एक बार उन्होंने पुछा, क्या इतना घनत्व इनमें है? इस सवाल केलिए मेरे पास, बस, अपना ही जवाब था। मैं ने आस्वादन किया है। दूसरा भी, तीसरा भी या चौथा भी अपने ढंग से इस रचना का आस्वादन कर सकता है। 'इसका मुख्य कारक तत्व क्या है?' उनके इस सवाल केलिए मेरे पास जवाब था, 'इसकी चारुता' याने 'इसका सौंदर्य'। 'सौंदर्य से तुम्हारा मतलब क्या है?' वे छोड़नेवाले नहीं थे। मैं ने कहा 'एक आंतरिक जीवन - स्पंदन जो आपके हर शब्द में मैं सुन पा रहा हूँ।' वे मुझे सुनते रहे।

'शहर सो रहा है', 'उठता चाँद डूबता सूरज', 'फूल और काँटे', 'सीढ़ी और साँप' तथा 'घने केर तरु तले' आदि विश्वनाथ अय्यर के प्रमुख ललित निबंध संकलन हैं। इनके अलावा 'अभयकुमार की आत्मकहानी' नाम से एक यात्रा विवरण भी प्रकाशित है। इन तमाम रचनाओं में विश्वनाथ अय्यर ने केरल के जीवनानुभवों का ही अवलंब लिया है। केरल की विशिष्ट संस्कृति के प्रति वे आकृष्ट थे। केरल की लोककथा, लोक संस्कृति, मलयालम भाषा का सौंदर्य आदि उनकी रचनाओं में चर्चित होते हैं। उनकी लोकोन्मुखता विशेष उल्लेखनीय है। रचनात्मकता में लोक - मन की संभावनाओं से वे परिचित थे। यदि उनकी रचनाएँ आज भी हमें आकृष्ट करती हैं तो उसका मुख्य कारण उनकी पारदर्शी लोकदृष्टि है।

अपने प्रदेश विशेष के प्रति विश्वनाथ अय्यर का अनियंत्रित मोह रहा। वे हिन्दी के रचनाकार थे। हिन्दी के अध्यापक थे। हिन्दी के प्राचार्य थे। लेकिन उन्होंने एक जान लिया था कि केरल और मलयालम को छोड़कर वे आगे बढ़ना नहीं चाहते थे। शुरू से उन्होंने तुलनात्मक साहित्य को महत्व दिया था। केरलीयों के हिन्दी केलिए किए गए योगदान पर उन्होंने विस्तार से लिखा। 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' इसी का प्रतिफल है। 'केरल की लोक कथाएँ' नामक पुस्तक भी उन्होंने रची है। केरल के हिन्दी रचनाकारों की

सृजनात्मक भूमिका को आधार बनाकर विश्वनाथ अय्यर ने एक इतिहास ग्रंथ भी लिखा है - 'केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास'। महत्वपूर्ण मलयालम उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद कार्य भी उन्होंने किया है। जर्मन विद्वान हेरमन गुंटर्ट ने सबसे पहले प्रामाणिक मलयालम कोश की रचना की थी। हेरमन गुंटर्ट पर उन्होंने विभाग में एक संगोष्ठी का आयोजन किया था। उसमें प्रस्तुत प्रपत्रों की मलयालम में ही उन्होंने एक पुस्तक संपादित की है - 'गुंटर्ट : एक अध्ययन'। गुंटर्ट के मलयालम में योगदान के बारे में उपलब्ध पुस्तकों में इस संपादित पुस्तक का महत्वपूर्ण स्थान है। उक्त पुस्तक के प्रकाशन के कई वर्षों बाद मैं ने उसकी प्रासंगिकता के बारे में सोचा तो मुझे लगा कि वे एक भाषाप्रेमी संस्कृति धर्मी हैं। हिन्दीतर प्रदेश में रहकर हिन्दी केलिए निरंतर साधनारत होना, हिन्दी को माध्यम बनाकर मलयालम साहित्य को हिन्दी भाषियों केलिए परिचित कराना, अनुवाद कार्य को अनुसृजन के रूप में आत्मसात् करना, उसी दौरान अनुवाद की सैद्धांतिकी पर गंभीरता के साथ विचार करना आदि मामूली बातें नहीं हैं।

विश्वनाथ अय्यर ने पहली बार दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों के इतिहास में ऐसी एक पहल की है और वह है विभागीय शोध पत्रिका का आरंभ। 'अनुशीलन' इसी का परिणाम है। 'अनुशीलन' के विभिन्न अंक मलयालम साहित्य पर केंद्रित हैं। केरल की रामकथाओं पर केंद्रित 'अनुशीलन' का अंक विशेष उल्लेखनीय है। मलयालम नाटक और रंगमंच पर केंद्रित अंक भी प्रामाणिक है। उसकी सामग्री की तैयारी में मेरी भी भूमिका रही है। रंगधर्मियों से मिलना और रंगमंच के इतिहास को हिन्दी में प्रस्तुत करना उनका उद्देश्य था। शाम को वे कहते - 'चलो हमें कलां से मिलना है।' मैं भी साथ चलता। मुझे आज भी याद है कि उस अंक को प्रासंगिक बनाने हेतु उन्होंने अपने बल-बूते पर कई कार्य किए हैं। मैं निरंतर उनका साथ देता था। उस अंक का (अनुशीलन का) आवरण चित्र भी मैं ने बनाया था जिसे उन्होंने पसंद किया था। हिन्दी के आचार्य पद पर आसीन रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा का भरपूर उपयोग करके केरल में मौलिक हिन्दी लेखन को दिशा देने में विश्वनाथ अय्यर की महती भूमिका रही है। मौलिकता तभी भी निस्पंदित नहीं होती, बल्कि वह सदैव जीवंत रहती है। इसलिए आज भी उनकी रचनाएँ पठनीय हैं, पाठकों को आकृष्ट करती हैं।

उनकी एक लालित रचना का शीर्षक है - 'घने केर तरु तले'। बहुत ही काव्यात्मक शीर्षक। मैं ने उनसे भी इसका जिक्र किया तो वे मुस्कुराते रहे। उन्हें भी यह काव्यात्मक शीर्षक पसंद था ही। आज मुझे लग रहा है कि घने केर तरु तले एक रचनाकार की अद्‌भुत प्रतिभा से निरंतर विकसित होती रही, जिससे हम सभी अभिभूत भी हुए और भविष्य में भी कई अभिभूत होते रहेंगे।

◆ (पूर्व उपकुलपति
महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय, वर्धा।)
सांत्वना, कोलयकोड़
पुतुश्शेरी पी.ओ.
पालक्काटु - 678 623।

झाँकियाँ उत्तर दक्षिण की

♦ डॉ.के.जी.प्रभाकरन

'निबंध' गद्य की सर्वाधिक स्वच्छंद विधा है। 'निबंध' में कभी प्रौढ़ विचारों का संगुफ़न होता है तो कभी भावावेग की उन्मुक्त अभिव्यक्ति। अपनी स्वच्छंद प्रवृत्ति में 'निबंध' कभी 'रेखाचित्र' की सीमाओं को छूता है तो कभी अपने को 'संस्मरण' के निकट पाता है और कभी 'यात्रावृत्त' से तादात्म्य करता लगता है।

डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर का निबंध संग्रह 'उठता चाँद डूबता सूरज' निबंध की स्वच्छंद प्रवृत्ति का प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है। 'शहर सो रहा है' के बाद अय्यर की निबंध यात्रा का यह दूसरा आयाम है। यह पन्द्रह निबंधों का संग्रह है। इसके अधिकांश निबंध वर्णनात्मक हैं। यात्रा विवरण से लेकर संस्मरण तक, रेखाचित्र से लेकर विनोद की हल्की - फुल्की रचना तक इसमें शामिल है। यही कारण हो सकता है कि अपने इन निबंधों को 'ललित निबंध' कहते हुए लेखक द्विधाग्रस्त हैं। उनका आत्मसाक्ष्य प्रस्तुत है - "उठता चाँद डूबता सूरज को अन्य विशेषण देने की असमर्थता के कारण मैं ने ललित निबंध संग्रह बताया है।" (लेखक के दो शब्द)।

'उठता चाँद डूबता सूरज' के अधिकांश निबंध यात्रा विवरण हैं। 'झपकियों के बीच' 'गोश्रीनगर से श्रीनगर', 'आधी-अधूरी स्मृतियाँ', 'आः यह धरती कितना देती है?', 'मेरा मन अनत कहाँ सुख पावे?' आदि में लेखक की विभिन्न यात्राओं का वर्णन है। इनमें 'गोश्रीनगर से श्रीनगर' और आधी- अधूरी स्मृतियाँ' महत्वपूर्ण हैं। पहले में लेखक की कश्मीर यात्रा का वर्णन है। कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा के साथ उसके भूगोल, इतिहास, कला और संस्कृति आदि के चित्र इसमें प्रस्तुत हैं। 'आधी- अधूरी स्मृतियाँ' में मॉरीशस में संपन्न दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अनुभवों का ब्योरा है। पितृदेश की राजभाषा का उत्सव मनाकर मॉरीशस वासियों ने अपना गौरव बढ़ाया, साथ ही भारत का भी।

डॉ.अय्यर के इन यात्रा विवरणात्मक निबंधों में उनकी सैलानी वृत्ति ही नहीं, बल्कि उनकी सच्ची घुमक्कड़ जिज्ञासा भी प्रकट होती है। लेखक की दृष्टि किसी प्रदेश या स्थल विशेष की प्रकृति और जन जीवन तक सीमित नहीं रहती, लेकिन उसके इतिहास और परंपरा की जड़ों तक पहुँच जाती है। ये निबंध लेखक की निरीक्षण शक्ति, अध्यवसाय और तलस्पर्शी दृष्टि के जीवंत दस्तावेज़ हैं।

'सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी', 'बारिश के देश में नये नये सेतुबंध', 'आज लहरों में निमंत्रण' आदि निबंधों में केरल की प्राकृतिक सुषमा और जन-जीवन का अंकन है। केरल की भौगोलिक विशेषताओं के साथ जनता की चित्तवृत्ति, जातीय स्वभाव और धार्मिक आस्थाएँ इनमें चित्रित हुई हैं।

'उठता चाँद डूबता सूरज' निबंध में प्राचीन कोचीन नरेशों के राजमहल 'कनकक्कुन्नु कोट्टारम्' (हिल

पालस) का वृत्तांत है। कोचीन के राजघराने का इतिहास इसमें प्रस्तुत है। हिल पालस के बरामदे में खड़े होकर लेखक ने सांध्य प्रकृति का जो मनोरम रूप देखा, वही निबंध संग्रह के शीर्षक का प्रेरक बना। लेखक के शब्दों में "पश्चिमी दिशा में अरुण सूर्य गद्‌गद् हो विदा ले रहा था। पूरब में नव किशोर की स्फूर्ति लिये कोमल चाँद नभ तल की ओर झिझककर बढ़ रहा था।" लेखक के अनुसार उठता चाँद डूबता सूरज तो आँख मिचौनी का खेल खेलते हैं, जो कभी खतम नहीं होता। लेकिन इतिहास का सूरज एक बार डूब जाता है तो वह फिर नहीं उठता। हिल पालेस एक राजवंश के डूबे हुए वैभव सूर्य का प्रतीक बनकर खड़ा है।

'होली और ओणम' में उत्तर भारत की होली और केरल के ओणम का चित्रण है। दोनों भारत के राष्ट्रीय त्योहार हैं। इन त्योहारों के मूल में जो लोक कथाएँ हैं, समकालीन संदर्भ में उनके पुनाराख्यान का प्रयास लेखक ने किया है। जनजीवन की सहजता, निश्छलता और मस्ती की दृष्टि से ये त्योहार महत्वपूर्ण हैं। इन त्योहारों से संबन्धित लोकगीत हमारी जातीय स्मृतियों और परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हैं। लेकिन आज इन त्योहारों के धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों की परिणति जनता की उत्सवधर्मिता में हुई है। उत्सव की चमक-दमक और भीड़-भाड़ में जातीय स्मृतियाँ विस्मृत होती जा रही हैं। यहीं नहीं, ओणम जैसे त्योहारों को पर्याटन पर्व बनाकर उनका जो बाज़ारीकरण किया जा रहा है उससे उनकी गरिमा और पवित्र संकल्पना को ठेस लगती है।

'लीजिए आप की चाय' में चाय की कहानी है, जो काफ़ी मनोरंजक है। दक्षिण - उत्तर और पूरब - पश्चिम को मिलानेवाली मीठी चाय की कहानी लेखक की कुशल लेखनी से निकलकर केरल और तमिलनाटु की प्रकृति और जन रुचियों की छूती हुई मुल्कराज आनंद की 'दो पत्तियाँ और एक कली' तथा सरदार पूर्णासिंह के 'मज़दूरी और प्रेम' तक पहुँचती है। चाय की पत्तियाँ तोड़नेवाली अंगुलियों के दर्द और उनकी ममता का स्पर्श डॉ.अय्यर के कवि हृदय को गहरे छू जाते हैं।

'सागर के नीलकंठ और गुलमर्ग का शेरखाँ' निबंध की अपेक्षा रेखाचित्र तथा संस्मरण के कहीं निकट हैं। प्रथम में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के साहचर्य की स्मृतियों के दायरे में महिमामय व्यक्तित्व को सूक्ष्म रेखाओं में उकेरा गया है। भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थावान और मानवतावादी इस महान आचार्य की औढ़र दानिता ने उन्हें सागर का निलकंठ बना दिया। 'गुलमर्ग का शेरखाँ' में गुलमर्ग के कुली शेरखाँ का रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। इस निबंध में लेखक की श्रमिक वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं हार्दिक संवेदना प्रकट हुई है।

'मानव - मच्छर संवाद' में लेखक की विनोदप्रियता प्रकट हुई है तो 'बहने दो' में प्रगतिशील उदार दृष्टि। सतत प्रवाहमान जीवनधारा के पथ की अवरोधक शक्तियों को तोड़ने का आह्वान 'बहने दो' में है। 'मानव - मच्छर संवाद' का हल्का - फुल्का हास्य अन्य निबंधों द्वारा रचित पाठकीय मनोदशा के विरुद्ध जाता है।

डॉ.अय्यर के इस निबंध संग्रह में उत्तर और दक्षिण की प्रकृति, जन जीवन, कला और साहित्य की अनेक झाँकियाँ मिलती हैं। इन निबंधों में भारत का जन जीवन उसके समस्त सांस्कृतिक-वैभव तथा लोक-चेतना के उन्मुक्त उल्लास के साथ प्रतिबिंबित हो उठता है। भारत की भावात्मक एकता को प्रशस्त करनेवाले

ये निबंध भारतीय संस्कृति के प्रति लेखक की गहरी निष्ठा के प्रमाण हैं। शहरी जीवन की तड़क - भड़क और विलासिता में तिरोहित होती ग्रामीण जीवन की सहजता और भोलेपन पर लेखक का भावुक हृदय कराह उठता है।

उपभोक्तावादी सभ्यता के नये माहौल में कला के अवमूलन का एक नया तरीका निकल आया है। विशिष्ट कलाओं के प्रदर्शन के अपने विधि-विधान और अनुष्ठान होते हैं। उनकी अवहेलना कर पैसे केलिए अनुचित स्थान पर अपात्र के सामने कला का प्रदर्शन उसका अवमूल्यन करना है। विदेशी पर्यटकों के सामने कथकलि के प्रस्तुतीकरण पर लेखक तिलमिला उठते हैं - "कथकलि की कथाएँ बहुधा पौराणिक हुआ करती हैं और उसका मंच-विधान आदि कुछ धार्मिकता रखता है। पवित्रता की रक्षा केलिए ही हमें मंदिरों के आँगनों में सीमित रखते थे। ऐसी कथा और कलाएँ शराब में धुन बैठे पर्यटक स्त्री - पुरुषों के सामने केवल पैसे केलिए प्रस्तुत करना सच्चे कलावंतों को बड़ा कष्टदायक ही लग सकता है।" - (आज लहरों में निमंत्रण)। 'ओणम' को पर्यटक उत्सव बनाकर लोक जीवन एवं संस्कृति से जुड़े इस त्योहार का जो बाज़ारीकरण किया गया है, उस पर लेखक का व्यंग्य देखिए - "अपने उत्सव को बेचकर पर्यटकों से धन कमाने की हमारी व्यावसायिक सूझ और स्वार्थ-भावना देख महाबलि सम्राट खुश तो ज़रूर नहीं होंगे। शायद समारोह के संयोजक अफ़्सर पहली पंक्ति की एक कुरसी देकर बात स्पष्ट कर दें।"

डॉ.अय्यर के व्यंग्यकार एवं विनोदी व्यक्तित्व के दर्शन प्रायः सभी निबंधों में होते हैं। कहीं हल्का - सा व्यंग्य है, तो कहीं पाठकों के होंठों पर स्मित रेखा खींचनेवाली नर्मोक्तियाँ। कहीं तीखी व्यंग्योक्ति भी। कोवलम के समुद्री दीवार के निर्माण में जो विलंब हो रहा है उस पर लेखक का व्यंग्य देखिए - "सरकारी लाल फीता समुद्रराज को भी नहीं छोड़ता।" रेलगाड़ी में अपने सौदे की बिक्री बढ़ाने केलिए यात्रियों को मुफ्त में पेन्सिल, रब्बर और अलपीन भेंटे करनेवाले युवक पर लेखक की नर्मोक्ति है - "ये मामूली युवक नहीं हैं, महान पुरुष हैं। नये क्रिस्तमस के सान्ताक्लॉस हैं।" मॉरीशस के विश्व हिन्दी सम्मेलन के प्रतिनिधियों की लोभवृत्ति पर लेखक का व्यंग्य है- "हमारे हिन्दी सम्मेलन के प्रतिनिधियों के वार्तालाप में हिन्दी कविता या उपन्यास की चर्चा बहुत कम सुनायी पड़ी, लेखकों के नाम की भी। सभी लेखक ख्यातनामा साहित्यकार प्रोफेसर लोग तक जापानी धड़ी, कालकुलेटर और न जाने कैसी चीज़ बटोरने पर जुटे हुए थे। सब के होंठों पर अपने-अपने सौदे की चर्चा थी।"

चाहे यात्रा विवरण हो, चाहे संस्मरण, चाहे रेखाचित्र सभी के मूल में अपने पाठकों से सीधे बोलते - बतियाते हुए लेखक हैं। उनकी सहजता और आत्मीयता सर्वत्र महक उठती है। भाषा और संस्कृति के प्रति अपने असीम अनुराग का परिचय देते हुए लेखक ने अपने को 'हिन्दी के प्रमी और भारतीय गरिमा का आराधक अध्यापक' कहा है - (मेरा मन अनत कहाँ सुख पावै)। डॉ.अय्यर के संस्कारी व्यक्तित्व के संकल्प गहरी सांस्कृतिक अस्मिता के संकल्प हैं। सांस्कृतिक चेतना के ह्रास और अस्तित्व के संकट की इस घटी में डॉ.अय्यर के निबंधों का महत्व स्वयंसिद्ध है।

♦ (पूर्व प्राचार्य)
'सुरभि', कोट्टुङल्लूर - 680 664
तृशूर जिला।

स्मृतियों में डॉ.एन.ई विश्वनाथ अय्यरजी

♦ प्रो. डी. तंकप्पन नायर

हिन्दी, मलयालम और तमिल साहित्य के मर्मज्ञ, अनवरत साहित्य रचना करनेवाले वाणी देवी के अनन्य उपासक, कोच्चिन विश्वविद्यालय के प्राक्तन अध्यक्ष और प्रोफेसर, हिन्दी और मलयालम में अनेक मौलिक एवं अनूदित कृतियों के प्रसिद्धि-प्राप्त लेखक, हिंदी प्रचार आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभानेवाले निष्ठावान हिंदी प्रेमी आदि स्व. डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यरजी के बहुआयामी व्यक्तित्व के कुछ पहलू हैं। विनयशील प्रतिभा-संपन्न विद्वान मनीषी अय्यरजी की प्रशस्ति केरल की सीमाओं को तोड़कर सुदूर उत्तर तक फैली। अनेक विश्वविद्यालयों के परीक्षक के रूप में तथा विश्वविद्यालय स्तर के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की योजना के अन्तर्गत अध्ययन-दौरा करने के कारण उनका संपर्क मूर्धन्य विद्वानों के साथ लगातार होता रहा और परिणामस्वरूप उन्होंने जो विपुल ज्ञान अर्जित किया उससे सैकड़ों छात्र लाभान्वित हुए। अपनी विद्वत्ता, अनुभव एवं योग्यता के आधार पर उन्हें विविध विषयों के शोधार्थियों का मार्गदर्शक बनाया गया।

अनुवाद, ललित निबंध और केरल के हिन्दी साहित्य का इतिहास अय्यरजी का प्रमुख कार्यक्षेत्र रहा है और उन्हें अनुवाद क्षेत्र का महारथी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। 'केरल के विद्यानिवास मिश्र' के रूप में वे ख्याति-प्राप्त हैं। उन्होंने केवल अनुवाद-कार्य ही नहीं किया है, बल्कि अनुवाद सिद्धान्त पर ग्रंथों का प्रणयन भी किया है जो कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों के रूप में स्वीकृत हैं। देश की भावात्मक एकता को बनाये रखने के प्रयत्न के रूप में ही उन्होंने अनुवाद कार्य को निष्ठापूर्वक स्वीकारा।

1953 -1955 के दौरान डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर तिरुवनन्तपुरम में स्थित यूनिवर्सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग के अध्यापक के रूप में कार्यरत होते समय उनका शिष्य होने का सौभाग्य मुझे मिला था। तब से ही उनके अनोखे व्यक्तित्व, असीम विद्वत्ता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी भक्ति-भावना का परिचय मुझे मिला था। उनके अनन्य व्यक्तित्व का जो अमिट प्रभाव मुझपर पड़ा था वह मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, डॉ.पी.लता एवं अखिल भारतीय हिंदी अकादमी के सारे कार्यकर्ता अभिनन्दनीय हैं जिन्होंने अकादमी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'शोध सरोवर पत्रिका' में अय्यरजी की जन्मशती के इस वर्ष में उनकी अक्षर-पूजा करने का निर्णय लिया है। डॉ. पी. लता तो अय्यरजी की प्रिय शिष्या भी है और उन्हीं के निर्देशन में लताजी ने अपना शोध प्रबंध तैयार किया है।

सन् 1948 के लगभग अय्यरजी के साहित्यिक जीवन का श्री गणेश हुआ और अन्तिम समय तक उनकी साहित्यिक चेतना सजग एवं सक्रिय थी। उनकी सब से प्रिय एवं सशक्त साहित्य विधा ललित निबंधों में अपनी तमाम अनुभूतियों, विचारों एवं अपार ज्ञान को अभिव्यक्त किया है। उनकी सुपुत्री श्रीमती वी.उषा ने केरल हिंदी प्रचार सभा के वर्तमान जन संपर्क अधिकारी टी. गोपकुमार की उपस्थिति में इन पंक्तियों के लेखक को बताया कि पिताजी के द्वारा रचित अनेक रचनायें अप्रकाशित हैं। अगर उनका प्रकाशन होगा तो हिन्दी

साहित्य की बड़ी उपलब्धि होगी। इस दिशा में 'अखिल भारतीय हिंदी अकादमी' महत्वपूर्ण कदम उठाएगी तो हिंदी जगत उस संस्था से सदा ऋणी रहेगा। अय्यर जी ने हिंदी की ज्योति जलाकर भावात्मक एकता के निर्मण में जो महत्वपूर्ण प्रयास किया वह असल में उच्च सामाजिक सेवा-कार्य है। वाग्देवता के वरद पुत्र विश्वनाथ अय्यर जी ने अपनी साधना से साबित किया कि हिंदी साहित्य-सृजन के मामले में दक्षिण भारत भी हिंदी क्षेत्रों से किसी कदम से पीछे नहीं है। यह खेद की बात है कि अपनी तमाम ज़िन्दगी हिंदी साहित्य की सेवा के लिए अर्पित करनेवाले अय्यर जी को हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखकों ने समुचित स्थान नहीं दिया है।

अपने शिष्यों के प्रति एवं प्रिय व्यक्तियों के प्रति अय्यर जी में वात्सल्य का भाव ओतप्रोत था, जिसे प्रत्यक्ष से अनुभव करने का सौभाग्य अनेकों अवसर पर मुझे मिला है और मेरी जानकारी में 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के पी.आर.ओ., टी. गोपकुमार को भी यह मिला है। उनमें वात्सल्य भाव भरपूर रहने के कारण ही वात्सल्य भाव की मूर्तिदेवी माता अमृतानन्दमयी के वे प्रगाढ़ आराध्य थे और उनपर उन्होंने काफ़ी लिखा भी है। इन पंक्तियों का लेखक जब 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के स्नातकोत्तर केन्द्र का प्राचार्य था तब मैं अय्यरजी से प्रार्थना की कि आप जैसे प्रखर प्रतिभा के व्यक्ति स्नातकोत्तर छात्रों को पढायेंगे तो प्रस्तुत केन्द्र की प्रसिद्धि बढ़ेगी। मुझे आश्चर्य में डालते हुए उन्होंने मेरी प्रार्थना मंजूर की और कक्षा लेने लगे। तब तक कार्य ज़ारी रहा जब तक उनका स्वास्थ्य उनका साथ देता रहा।

जिस वात्सल्य भाव का उल्लेख हुआ उसका दूसरा दृष्टान्त भी कभी भुलाया नहीं जा सकता। अय्यरजी के मन में टी. गोपकुमार के प्रति पुत्रवत् प्यार था जो आजकल के ज़माने की तरह दिखावे का नहीं था, वह प्यार इतना असीम था कि अय्यर जी ने अपनी पत्नी की अंत्येष्टि क्रिया के कुछ अनुष्ठानों में गोपकुमार को भी सम्मिलित कराया था। जब वे कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे जब अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी में अनुवाद पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की थी तब मुझ जैसे एक नगण्य शिष्य को उसमें भाग लेने का अवसर देकर असल में उन्होंने मुझ पर वात्सल्य की अमृतधारा गी बरसाई थी। विस्तार के भय से अधिक दृष्टान्तों का उल्लेख करना समीहीन नहीं समझता।

अय्यर जी के मन में केरल की सांस्कृतिक विरासत एवं कलाओं के प्रति आराधना रखते थे और शायद इसीलिए उन्होंने केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार स्वाति तिरुनाल के पदों का संपादन किया है। अय्यर जी की राय में प्रथम केरलीय गीतकार को हिंदी साहित्य के इतिहास में समुचित स्थान देना चाहिए। केरल की लोक कथायें, केरल की जन-कथायें, केरल की वीरगाथायें आदि कृतियाँ केरल की संस्कृति के प्रति उनके अनुराग के दृष्टांत हैं।

'केरल हिन्दी प्रचार' सभा द्वारा समय-समय पर आयोजित अनेक कार्यक्रमों में लगातार उनका सहयोग मिलता था। सभा के तत्वावधान में हर साल राज्यस्तरीय हिन्दी पखवाड़ा समारोह होता था। कई वर्ष अय्यर जी ने समारोह के मुख्य संयोजक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अय्यरजी द्वारा किए गये बहुआयामी कार्यक्रमों को देखते हुए ऐसा लगता है कि ये केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था है। अय्यरजी का देहांत 07-03-2014 को हुआ और उनके तिरोधान से 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' को एक सच्चे हितैषी की क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति होना असंभव है। उनकी जन्मशताब्दी के इस अवसर पर उनके हज़ारों शिष्यों के साथ मैं भी उनका नमन करता हूँ।

◆ संपादक, केरल ज्योति पत्रिका
केरल हिन्दी प्रचार सभा।

पुण्य कृती आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

♦ डॉ.जे.रामचन्द्रन नायर

सृजनात्मक प्रतिभा से समृद्ध-भाषाविद् आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी का व्यक्तित्व कई अर्थों में विशिष्ट है। उनके व्यक्तित्व से निकटता प्राप्त करने का अवसर मुझे विरल ही मिला है। मेरे पिताश्री प्रो.आर.जनार्दनन पिल्लै जी एवं अय्यर जी की मैत्री 'सखा' स्वरूप थी। दोनों अव्वल दर्जे के थे हिन्दी प्रेमी प्रचारक रहे। घर में ही मेरे पिताजी का मार्गदर्शन प्रभूत मात्रा में मुझे मिल रहा था। इसलिए मुझपर उनकी दृष्टि सम्यक् ही रही। लेकिन वे मुझसे कभी दूर नहीं रहे क्योंकि उनकी रचनाएँ मुझे सतत आकर्षित करती रहीं।

उन्होंने भारत-भारती के उतार-चढ़ाव देखे। भारतीय इतिहास के प्रत्येक अध्याय में सांस्कृतिक - सामाजिक जागरण की, राजनीतिक -आध्यत्मिक - नैतिक - आर्थिक घटनाओं की ऐसी स्थितियाँ मिलती हैं, जो प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति को सोचने के लिए महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान करती हैं। बीसवीं शताब्दी के विशाल जागरण की पृष्ठभूमि में एक नहीं अनेक चिन्तक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, रचनाकार, कलाकार, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक नेता और इतिहास वेत्ता एक साथ देखे जाते हैं। उनमें एक प्रो. अय्यरजी थे।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतीय साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति आधुनिकता ने प्रखर सामाजिक चेतना के रचनात्मक भावबोध में विकास पाया था। कविता के क्षेत्र में अनेक प्रवृत्तियाँ हुईं। कहानी, उपन्यास आदि सभी विधाओं में नयेपन की रेखाएँ प्रदृष्ट होने लगी थीं। वह साहित्यिक परिवर्तन 'निबंध साहित्य' में भी नज़र आ रहा था। हिन्दी 'ललित निबंध' के पुरोधा आचार्यों में श्री. अय्यर जी का महती स्थान है। उनके 'ललित निबंध' मन को उद्वेलित एवं उल्लसित करनेवाले हैं। मैंने उनके साहित्य का बड़े चाव से अध्ययन किया। उनके हर शब्द ने मुझमें साहित्य-आस्वादन का उदाहरण प्रस्तुत किया। निबंध साहित्य-सृजन के क्रम में कहानियाँ, लेख, इतिहास ग्रंथ, समीक्षात्मक ग्रंथ आदि के रचना-कर्म में भी वे व्यापृत रहे थे।

अध्यापन कला में सिद्धहस्त आचार्य प्रवर ने उत्तर - दक्षिण के बीच एक सेतु-स्वरूप काम किया। नई दिल्ली, आग्रा, काशी, राजस्थान आदि स्थानों के बुक स्टेलों में बिक जानेवाली दक्षिण भारतीय लेखकों की रचनाओं में प्रथम स्थान अय्यर जी को रचनाओं को प्राप्त है। उनकी आध्यात्मिक संस्कृति हिन्दी भाषा को सींच रही थी। वैसे अधिष्ठात्री माँ सरस्वती का वरद पुत्र होने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ। तत्कालीन भाषाप्रेमी देशवासियों में उत्कट देशप्रेम के बीज उन्होंने बोये। आगामी पीढ़ी को सुदृढ़ परंपरा प्रदान करने में एक अटूट कड़ी के सदृश उनकी छवि हमारे दिल में अंकित है।

अपने इतिहास ग्रंथ के माध्यम से गुणी युवक साहित्यकारों का अभिनंदन उन्होंने किया। उन तरुणों में मैं भी एक था। मेरी व्यंग्यपरक कविताएँ उन्हें पसंद थीं। उनकी कृपादृष्टि मुझ पर पड़ी है, यह सोचकर मेरी खुशी की सीमा नहीं रही। एक बार 'केरल ज्योति' मासिक पत्रिका के एक अंक में भी मेरा ज़िक्र उन्होंने किया था। उनके मेधावी व्यक्तित्व से प्राप्त जानकारियों की मदद से मैं भी साहित्यिक - सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहा। 'उठता चूँद डूबता सूरज', 'शहर सो रहा है', 'फूल और काँटे', 'सीढ़ी और साँप', 'घने केर तरु तले' जैसे निबंध संकलनों के कारण आज भी उनका नाम विद्यार्थियों की जुबान में ज्यों का त्यों मौजूद है।

जब भी हम मिलते थे ज़्यादा बात नहीं की जाती थी, लेकिन मेरे प्रति उनकी दृष्टि सदा सकारात्मक ही रही। सटीक बात करने में वे माहिर थे। मेरी याद में उनकी बुलन्द आवाज़ में हमेशा सुनने में आई चन्द पंक्तियाँ आज भी जीवन्त उपस्थित हैं -

"निशि की दो घड़ियाँ बीतीं, बदन हुआ बेहाल,
जगकर जो आँखें खोलीं मच्छर दिये दिखाय -"

और भी कतिपय पंक्तियाँ थीं... बस मैं भूल गया हूँ।

अय्यरजी का भौतिक शरीर आज हमारे साथ नहीं है। किन्तु 'ललित निबंधकार' के रूप में बहुचर्चित डॉ.अय्यरजी भारतीय जन मनस में अमर रहेंगे।

◆ पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
महात्मागाँधी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम।

सही उत्तर चुनें

डॉ.पी.लता

1. कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
(अ) डॉ.एन.रामन नायर
(आ) डॉ.पी.वी.विजयन
(इ) डॉ.ए.चन्द्रहासन
(ई) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

2. डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर की मौलिक रचनाओं में किस विधा की रचनाएँ अधिक प्रखर हुईं?
(अ) कविता
(आ) संस्मरण
(इ) जीवनी
(ई) ललित निबंध

3. 'उज्जयिनी' के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?
(अ) हरिहरन उण्णित्तान (आ) वी.डी.कृष्णन नंपियार
(इ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर (ई)पी.माधवन पिल्लै

4. 'उज्जयिनी' के मूल कवि कौन हैं?
(अ) अक्कित्तम
(आ) सच्चिदानन्दन
(इ) सी. राधाकृष्णन
(ई) ओ.एन.वी.कुरुप

5. 'वेरुकल' मलयालम उपन्यास के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?
(अ) डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै
(आ) डॉ.एस.तंकमणि अमम्मा)
(इ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर
(ई) डॉ.वी.डी.कृष्णन नंपियार

(शेष पृ.सं. 24)

सारस्वत साधक डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

♦ डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर हिन्दी क्षेत्र के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। सुन्दर दक्षिणों प्रांत केरल में रहकर राष्ट्रवाणी के बहुआयामी कार्यकलापों में निरंतर सक्रिय अय्यर जी की हिन्दी सेवा किसी से छिपी हुई नहीं है। अय्यर जी का वर्चस्व इन्द्रधनुषी रहा है। वे एक साथ संस्कृत के प्रकांड़ पंड़ित, हिन्दी के सफ़ल अध्यापक, सधे हुए शोधर्ता, स्वस्थ दृष्टि संपन्न शोध निदेशक, कुशल लेखक, अनुभवी अनुवादक, अनुवाद - चिंतक, समीक्षाक, संपादक, जीवनीकार, ललित निबन्धकार एवं सफल संगठक रहे हैं। ऐसे बहुमुखी प्रतिभावान डॉ.अय्यर जी के व्यक्तित्व तथा ब्रहद् रचना-संसार की एक झाँकी ही यहाँ प्रस्तुत की जा रही है:

केरल के पालघाट जिले के नूरणि नामक गाँव में सन् 1920 में विश्वनाथ अय्यर जी का जन्म हुआ। गाँव के हाईस्कूल में संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन के साथ उनकी प्रारंभिक शिक्षा शुरू हुई थी। केरल के हिन्दी प्रचार आँदोलन से प्रभावित अय्यर जी हिन्दी के अध्ययन में लग गये। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की कई परीक्षाए उन्होंने उत्तीर्ण कीं। सन् 1936 में महात्मा गाँधी के करकमलों से राष्ट्रभाषा परीक्षा का प्रमाण - पत्र प्राप्त करने का सुयोग उन्हें मिला। यह उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना रही। इस घटना ने उन्हें हिन्दी का अध्ययन ज़ारी रखने की प्रेरणा प्रदान की। हिन्दी के अध्ययन के साथ - साथ वे अध्यापन-कार्य में भी लगे। सन् 1940 में तिरुवनन्तपुरम के एक विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हुए।

मद्रास विश्वविद्यालय से आपने संस्कृत में तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए की उपाधियाँ प्राप्त कीं। तदनंतर बरसों तक केरल के विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर कॉलेजों में अध्यापक का कार्य किया। सन् 1959 में 'आधुनिक हिन्दी और मलयालम काव्य' - विषय पर शोध-कार्य करके आपने सागर विश्वविद्यालय से पी एच.डी को उपाधि प्राप्त की। शोध निदेशक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी का विशेष स्नेहपात्र रहने का सुयोग भी सागर विश्वविद्यालय के इस प्रथम दाक्षिणात्य शोध छात्र को मिला था। सन् 1963 में केरल विश्वविद्यालय के 'स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन केन्द्र, एरणाकुलम' के प्राध्यापक बने तथा बाद में विभागाध्यक्ष भी बने। सन् 1971 में यह केन्द्र कोच्चिन विश्वविद्यालय के अधीन आ गया तो डॉ. अय्यर उसके प्रथम आचार्य और अध्यक्ष बने। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर आसीन होकर डॉ. अय्यर जी ने विभाग के सर्वांगीण विकास केलिए जीजान से प्रयत्न किया। आज दक्षिण भारत के हिन्दी विभाग तथा वहाँ के पुस्तकालय को जो महत्वपूर्ण स्थान और मान्यता प्राप्त है उसके मूल में अय्यर जी की कर्मठ कार्यकुशलता एवं अपूर्व वैभव का बड़ा हाथ रहा है। आपने वहाँ न केवल एम.ए, पाठ्यक्रम शुरू किया वरन् एम.फिल् तथा पीएच.डी शोध कार्यक्रम का भी

प्रबन्ध किया। आधुनिक युग में अनुवाद की बढ़ती माँग से अवगत उन्होंने हिन्दी में अनुवाद एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया। बीच-बीच में कार्यालयों, संगोष्ठियों व नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन करके उन्होंने केरल के हिन्दी अध्ययन - अध्यापन को नूतन दिशा - निर्देश देने का प्रयास भी किया। इस सिलसिले में हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकारों और मनीषी विद्वानों को केरल में आमंत्रित करने तथा केरल के हिन्दी प्रेमियों को उनके दर्शन व भाषणों का लाभ उठाने का सुअवसर भी उन्होंने दिया। 'अनुशीलन' नामक विभागीय पत्रिका भी उनके ही उर्वर मस्तिष्क की देन है। विभाग की ओर से अनेकानेक अनुसंधानपरक एवं परिचयात्मक प्रकाशन निकालने की ओर भी आप प्रवृत्त हुए। कविपय प्रकाशनों के ज़रिए केरल के साहित्य व संस्कृति का परिचय हिन्दी भाषियों को देने का श्लाघनीय कार्य भी उन्होंने किया है। तो साल तक कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आप प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रहे। इस दौरान कई पी एच.डी छात्रों का आपने सफलतापूर्वक शोध-निर्देशन भी किया।

'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' के तत्त्वावधान में उत्तर भारत के कई विश्वविद्यालयों में अतिथि भाषण का सुअवसर भी उन्हें मिला है। अपने प्रौढ़, गंभीर तथा साथ ही साथ रसीले भाषण के ज़रिए पाठकों को मंत्रमुग्ध करने की कला में वे दक्ष हैं।

कोचिन में 'केरल हिन्दी साहित्य मंडल' जैसी संस्था की स्थापना (1970) जो हुई, उसके पीछे भी डॉ. अय्यर जी की प्रखर प्रतिभा सक्रिय रही है। मंडल के मुखपत्र 'साहित्यमंडल पत्रिका' के संपादक तथा बाद में उसके संपादक मंडल के सदस्य के रूप में उन्होंने कई नवोदित हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी साहित्यकारों को प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया है। उनके 'संपादकीय लेख' केरल के ही नहीं उत्तर भारत के हिन्दी विद्वानों के बीच भी चर्चित रहे हैं।

सन् 1980 में वे कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य व अध्यक्ष - पद से विमुक्त हुए और कोचिन से तिरुवनन्तपुरम आकर अपने घर रहने लगे। तभी से निरंतर लेखन-कार्य में संलग्न हैं। 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' की मुख - पत्रिका 'केरल ज्योति' में 'सारस्वत प्रदक्षिणा' शीर्षक स्थायी स्तंभ के ज़रिए वे देश की समसामयिक साहित्यिक - सांस्कृतिक गतिविधियों का विश्लेषण - मूल्यांकन नियमित रूप से दे रहे हैं। अन्यान्य पत्र - पत्रिकाओं में भी उनका लेखन-कार्य ज़ारी है।

अय्यर जी कुशल संयोजक हैं। 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के तत्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित किये जानेवाले राज्य स्तरीय हिन्दी सप्ताह या हिन्दी पखवाड़ा समारोहों के मुख्य संयोजक की भूमिका भी वे कई सालों से सफलतापूर्वक निभाते आ रहे हैं। अक्तूबर 1991 में भारत - भवन (भोपाल) द्वारा समायोजित 'हिन्दी मलयालम रचनाकार शिविर' की सफलता सचमुच उन्हीं की संगठन कुशलता पर निर्भर रही। नौ दिनों के भीतर ही शिविर के कार्यकर्ताओं द्वारा चालीस कविताओं, दर्जनों कहानियों व एक पूरे नाटक का मलयालम से हिन्दी में तथा कई रचनाओं का हिन्दी से मलयालम में अनुवाद - कार्य कराकर शिविर के समापन समारोह के दिन समग्र पाण्डुलिपियों का समाहार 'भारत भवन' के कर्मठ निदेशक तथा सुविख्यात नाट्यशिल्पी श्री दयाप्रसाद सिंहा जी के हाथों सौंप कर उन्होंने अपनी संगठन-कुशलता का सप्राण प्रमाण दिया तथा इसकी मुक्तकंठ

प्रशंसा के वे पात्र भी बने थे।

पुरस्कार एवं सम्मानः- अपनी हिन्दी-सेवा तथा साहित्य-सेवा केलिए डॉ.अय्यरजी केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों से कई बार पुरस्कृत एवं सम्मानित हुए हैं। नागपुर में आयोजित 'प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन' ने श्रेष्ठ हिन्दी सेवा के लिए उन्हें विशेष पुरस्कार प्रदान किया। मॉरिशस के द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन तथा लंदन में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में वे भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भाग ले सके। अपने विविध ग्रंथों के लिए वे केन्द्र सरकार, उत्तर प्रदेश तथा बिहार सरकार के द्वारा भी पुरस्कृत हुए। हिन्दीतर प्रदेश के वरिष्ठ हिन्दी सेवी की हैसियत से उत्तर प्रदेश सरकार का 'सौहार्द सम्मान' भी उन्हें प्राप्त हुआ था। सर्वश्रेष्ठ अनुवाद चिंतक के लिए 'भारतीय अनुवाद परिषद्' का 'नातालि पुरस्कार' भी उन्हें मिला। आचार्य आनंद ऋषि साहित्य पुरस्कार, राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार आदि के भी वे अधिकारी बने। विविध हिन्दी प्रचार संस्थाओं से भी उनका आदर - सम्मान किया। 'व्यावहारिक अनुवाद' शीर्षक ग्रंथ केलिए वे 'शिक्षा विभाग, भारत सरकार' की ओर से भी पुरस्कृत हुए।

पारिवारिक जीवन :- अय्यर जी का पारिवारिक जीवन भी सुखी था। अपने साहित्यिकार पति के लेखन-कार्य केलिए घर में सुख एवं शांतपूर्ण वातावरण तैयार कर देने में उनकी धर्मपत्नी विशेष ध्यान रखती थीं। लंबी यात्राओं में वे उनका साथ देती थीं तथा लेखन-कार्य आदि में काफ़ी प्रेरणा भी देती रहती थी। उनके दो बेटियाँ हैं - जयन्ती और उषा। दोनों विवाहित हैं तथा उनके बाल-बच्चे भी हैं। अपने दीर्घकालीन कर्मठ जीवन के उपरांत अय्यर जी का निधन 94 वर्ष की आयु में 7 मार्च 2014 को हुआ।

रचना संसार :- अय्यर जी का रचना - संसार अवश्य ही विस्तृत है। सन् 1948 के लगभग उनके साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश होता है। छोटे - छोटे परिचयात्मक लेखों व ग्रथों को लेकर उन्होंने साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया। 'होनहार बालक तथा अन्य कहानियाँ' शीर्षक कहानी संकलन सन् 1948 में प्रकाशित हुआ। 1949 तथा 50 के दौरान 'स्वतंत्र हिन्दी बोधिनी', 'हिन्दी रचना मित्र', अनुवाद चन्द्रिका', 'अनुवाद मंजरी' जैसे हिन्दी स्वयं शिक्षकों, व्याकरण व अनुवाद - अभ्यासवाले ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।

सन् 1959 में आपने 'मलयालम-हिन्दी व्यावहारिक कोश' का प्रकाशन किया। सन् 1950 के अनंतर डॉ. अय्यर की साहित्य-चेतना और सजग और सक्रिय ही उठी। इस दौरान आपने विभिन्न शोधपरक ग्रंथों की रचना की, जीवनियाँ व ललित निबन्ध लिखे व परिचयात्मक ग्रथों का प्रणयन भी किया। साथ ही साथ अनुवाद-कार्य में भी वे लगे रहे।

शोधपरक एवं परिचयात्मक ग्रंथ : - 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' (1962), 'केरल के प्रथम गीतकार' 91963) आदि डॉ.अय्यर की सूक्ष्म एवं स्वच्छ शोध दृष्टि के परिचयक ग्रंथ हैं। 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' शीर्षक कृति में केरल के ऐतिहासिक - सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए उक्त प्रांत में हिन्दी का क्रमिक प्रचार - प्रसार किस भाँति हुआ है, उसका सटीक विवरण प्रस्तुत किया गया है। केरल में हिन्दी के पठन-पाठन, हिन्दी में उच्च शिक्षा, हिन्दी शोध आदि का विशद विश्लेषण भी इसमें हुआ है।

केरल के हिन्दी लेखकों की कृतियों का समीक्षात्मक परिचय इस ग्रंथ में दिया गया है। केरलीय हिन्दी लेखकों

की देन पर प्रकाश डालनेवाली सर्वप्रथम कृति होने के नाते इसका अहम् महत्व है। परवर्ती लेखकों को इस ओर शोध-कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरण भी इस कृति ने दी है। 'केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार' शीर्षक कृति में उन्नीसवीं सदी में सुदूर दक्षिणी प्रांत केरल में रहकर हिन्दी में सुमधुर गीतों की रचना करनेवाले तिरुवितांकूर के महाराजा स्वाति तिरुनाळ् (1818 - 1849) के हिन्दी गीतों का संकलन किया गया है। कई अल्पज्ञात एवं अज्ञात गीतों को ढूँढ़ निकालने और उनका सज्ञाधित संस्करण निकालने का जो श्रमसाध्य कार्य डॉ. अय्यर जी ने किया है, वह वस्तुतः श्लाघनीय है। सन् 1970 में अय्यर जी का शोध प्रबंध 'आधुनिक हिन्दी तथा मलयालम काव्य' प्रकाश में आया, इसमें सन् 1918 से 1947 तक के तीन दशकों में विरचित हिन्दी और मलयालम कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत हुआ है। तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में यह कृति एक मील स्तंभ ही है।

जीवनी:- हिन्दी की 'जीवनी' विधा को डॉ.अय्यर की देन है 'महाकवि रवीन्द्रनाथ' तथा 'विज्ञान योगिनी'। 'महाकवि रमान्द्रनाथ' में कवीन्द्र रवीन्द्र की जीवनी रोचक व प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हुई है। 'विज्ञान योगिनी' में मदाम क्यूरी का जीवन - वृत्त है। विज्ञान जगत् तथा मानव हित केलिए तन - मन से समर्पित मदाम क्यूरी का जीवनचरित वस्तुतः प्रेरणादायक है।

ललित निबंध: 'ललित निबंध' डॉ.अय्यर जी की सबसे प्रिय एवं सशक्त साहित्य विधा रही है। लेखक की सृजनात्मक प्रतिभा उसी में सर्वाधिक चमकी है। लेखक ने अपनी तमाम अनुभूतियों के विवरणों और ज्ञान-भंडार की अभिव्यक्ति का माध्यम ललित निबंधों को बनाया है। अब तक उनके पाँच ललित निबंध संग्रह प्रकाश में आये हैं। वे हैं - 'शहर सा रहा है', 'उठता चाँद डूबता सूरज', 'फूल और काँटे', 'सीढ़ी और साप' तथा 'घने केर तरु तले'। इनमें संकलित 'ललित निबंधों' में लेखक का व्यक्तित्व पूरी तरह निखर उठा है। राष्ट्र के विज्ञान परिप्रेक्ष्य में केरल के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का आकर्षक संयोजन कतिपय निबंधों में हुआ है तो कतिपय निबंध लेखक के वैयक्तिक तथा अध्यापकीय अनुभवों से अनुप्राणित हैं। गंभीर से गंभीर विषयों को भी हास्य और व्यंग्य में लपेटकर सरस और सहज ढंग से प्रस्तुत करने की उनकी कला गजब की है। लेखक की सहज प्रवाहपूर्ण भाषा-शैली उनके 'ललित निबंधों' के संप्रेषण को और प्रभावी बना देती है। वस्तुतः हिन्दी ललित निबंध क्षेत्र को अय्यर जी की देन अनुपम है।

'अभयकुमार की आत्मकहानी' डॉ. अय्यर जी की सर्जनात्मकता के विकसित आयाम की परिचायक रचना है। आमुख में स्वयं लेखक ने लिखा है कि 'बाणभट्ट की आत्मकथा' जैसी प्रख्यात कृतियों से प्रेरणा व प्रभाव ग्रहण करके उन्होंने प्रस्तुत कृति की रचना की है। अभयकुमार एक टूरिस्ट या सैलानी बस है, जिसकी आत्मकहानी के द्वारा लेखक ने अपने घुमककड़ जीवन के विविध प्रसंगों को जीवन्त बनाया है। लेखक का यायावरी व्यक्तित्व इस रचना में खूब खिल - खुलकर सामने आता है। किसी भी सहृदय पाठक को पूरे केरल की सैर कराने में 'अभयकुमार की आत्मकहानी' सर्वथा सक्षम है।

अपने प्रांत और अपनी भाषा के बारे में बोलना और लिखना डॉ.अय्यर जी का बेहद प्यारा विषय रहा है। इस तथ्य का सप्राण प्रमाण है आपकी सन् 1992 में प्रकाशित परिचयात्मक कृति 'केरल। सन् 1966 में

प्रकाशित 'केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास' अय्यर जी की एक विशिष्ट कृति है। पाँच खंडों में विभक्त प्रस्तुत ग्रंथ में केरल में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार, हिन्दी शिक्षण - प्रशिक्षण, उच्चतर हिन्दी अध्ययन एवं शोध, केरल में मौलिक और अनूदित हिन्दी साहित्य, केरल की हिन्दी पत्रकारिता जैसे विषयों का विस्तृत विवेचन हुआ है।

'तुलनात्मक साहित्य' अय्यर जी की अन्तिम प्रकाशित कृति है। तुलनात्मक साहित्य सम्बन्धी अवधारणा, उसके प्रमुख तत्व, तुलनात्मक साहित्य का महत्व आदि पर प्रकाश डालते हुए भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में तुलनात्मक साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन आदि की संभावनाओं की ओर भी विद्वान लेखक ने इशारा किया है। तुलनात्मक अध्ययन के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं की समग्र चर्चा करनेवाला यह ग्रंथ अपने ढंग का अनुठा है।

अनुवाद तथा अनुवाद चिंतक :- मौलिक रचनाकार डॉ. अय्यर एक अव्वल दर्जे के अनुवादक और अनुवाद चिंतक भी हैं। हिन्दी से मलयालम तथा मलयालम व तमिल से हिन्दी में कई कृतियों का सफल अनुवाद उन्होंने किया है। मलयालम से हिन्दी में अनूदित और प्रकाशित उनकी प्रसिद्ध औपन्यासिक कृतियाँ हैं - आधी घड़ी (मूल लेखकः पारप्पुरम्), जड़ें (मूल लेखक : मलयाट्टूर रामकृष्णन), मरण सर्टिफिकेट (मूल ले. आनन्द) राम-राजा बहादुर (मूल ले. सी.वी.रामन पिल्लै), 'स्मारक शिलाएँ' तथा 'दवा' (मूल ले. पुनत्तिल कुञ्ञब्दुल्ला)। 'एक किशोरी फुलझड़ी-सी' शीर्षक मलयालम के विख्यात कथाकार टी. पद्मनाभन की कहानियों का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाश में आया है।

मलयालम के लोकप्रिय एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री.ओ.एन.वी.कुरुप के बहुचर्चित काव्य 'उज्जयिनी' का काव्यानुवाद भी डॉ. अय्यर जी ने किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी कविता, कहानी आदि के अनुवाद प्रकाशित होकर आये हैं। इस प्रकार के अनवाद-कार्यों द्वारा हिन्दी और मलयालम को परस्पर निकट लाने का सफल प्रयास अय्यर जी ने किया है। यों उत्तर और दक्षिण के बीच के सेतु को सुदृढ़ बनाने में उन्होंने अपनी महती भूमिका निभायी है। अनुवाद - चिंतन के क्षेत्र में भी डॉ. अय्यर जी का विशिष्ट योगदान है। अनुवादक तथा अनुवाद पाठ्यक्रम के अध्यापक के रूप में आपके गहरे अनुभव ने उनके अनुवाद चिंतन को काफ़ी परिपक्व एवं परिपुष्ट बनाया है। 'अनुवाद कला' तथा 'अनुवाद : भाषाएँ समस्याएँ' उनके अनुवाद - चिंतन संबन्धी बेजोड़ ग्रंथ हैं। विविध विश्वविद्यालयों ने इन कृतियों को अपने पाठ्यक्रमों में स्थान देकर इनको मान्यता दी है।

संपादन :- डॉ. अय्यर जी ने कई ग्रंथों का संपादन भी किया है। 'कथा तरंगिणी', 'काव्य सुषमा', 'केरल की वीरगाथाएँ', मलयालम काव्यधारा', 'दक्षिण के रामकाव्य' आदि आपके द्वारा संपादित ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों की सीमक्षात्मक भूमिकाओं व संपादकीय वक्तव्यों का भी खास साहित्यिक महत्व है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अय्यर जी के अनगिनत शोधपरक व अन्य लेख प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न पत्र - पत्रकाओं में अय्यर जी के अनगिनत शोधपरक व अन्य लेख प्रकाशित हुए हैं। बिखरे पड़े लेखों तथा विभिन्न संगोष्ठियों में प्रस्तुत उनके आलेखों को संकलित करना नितांत आवश्यक है। 'केरल का हिन्दी लेखन' विषय पर शोध करनेवालों के लिए यह विशेष उपयोगी रहेगा।

समवेततः डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी व्यक्ति

न होकर एक संस्था रहे हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य को उनकी देन अनुपम है।

हिन्दी क्षेत्र में अय्यर जी को मान्यता तो है ही, उनकी कृतियों को स्वीकृति मिलती है, किन्तु ज़रा विचारें कि क्या इतना पर्याप्त है? तमाम ज़िन्दगी हिन्दी साहित्य की सेवा केलिए अर्पित करनेवाले अय्यर जी को क्या, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने समुचित स्थान दिया है? हिन्दी साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता ऐसे प्रसंग में स्पष्ट मुखरित होती है।

वह शुभ घड़ी कब आएगी जब 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के 'जीवनी खंड' में अन्य हिन्दी भाषी लेखकों की कृतियों के सामानांतर 'महाकवि रवीन्द्रनाथ' तथा 'विज्ञान योगिनी' का समावेश होगा। ललित निबंधकारों की श्रेणी में डॉ. अय्यर का नाम भी आयेगा तथा आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय आदि के ललित निबंधों के समानांतर अय्यर जी के ललित निबंधों का अंकन व मूल्यांकन होगा। समय आ गया है कि इस ओर हिन्दी साहित्येतिहास के लेखकों की दृष्टि मुड़े और बने।

हिन्दी प्रदेश के प्रकाशक बन्धु व्याकरणिक-व्यावहारिक दृष्टि से अय्यरजी को हिन्दीतर नहीं, हिन्दी लेखक के रूप में ही मानते हैं किन्तु क्या, वे भी अपने गद्य संकलनों में अन्यान्य हिन्दी लेखकों के साथ अय्यरजी के निबंधों का भी चयन करते हैं और गद्य संकलन प्रकाशित करते हैं? हिन्दी के राष्ट्रव्यापी विकास की संभावनाएँ ऐसे छोटे - मोटे मुद्दों में परिलक्षित होती हैं न?

◆पूर्व प्रोफसर एव अध्यक्षा
हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम - 695 581

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.18 के आगे)

6.'वेरुकल' मूल उपन्यास के लेखक कौन हैं?
(अ) पारप्पुरम
(आ) आनन्दक्कुट्टन
(इ) सी.वी.रामन पिल्लै
(ई) मलयाट्टूर रामकृष्णन

7. 'मरण सर्टिफिकट' किस विधा की मलयालम रचना है?
(अ) उपन्यास
(आ) नाटक
(इ) कहानी
(ई) एकांकी

8. 'नातली पुरस्कार' प्राप्त डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर की रचना कौन-सी है?
(अ) अनुवाद कला
(आ) अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ
(इ) व्यावहारिक अनुवाद
(ई) प्रयोजनमूलक हिन्दी

9. 'मरण सर्टेफिकट' के हिन्दी अनुवाद का शीर्षक क्या है?
(अ) मृत्यु सर्टिफिकट
(आ) मरण सर्टिफिकट
(इ) मरण प्रमाणपत्र
(ई) मरण पत्र

10.'रामराज बहदूर' किस कोटि का उपन्यास है?
(अ) सामाजिक
(आ) ऐतिहासिक
(इ) यथार्थवादी
(ई) मनोवैज्ञानिक

(शेष पृ.सं. 27)

आचार्य विश्वनाथ अय्यरजी की सारस्वत साधना

♦ डॉ.एन.जी.देवकी

आचार्य विश्वनाथ अय्यरजी द्वारा विकसित हिंदी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय में सेव करने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ उसे मैं अपने अध्यापकीय जीवन का सौभाग्य मानती हूँ। न मैं उनकी शिष्या रही, न सहयोगी। 10 जुलाई 1971 में यूनिवर्सिटी ऑफ कोच्चिन की स्थापना हुई तो डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी यहाँ के प्रथम हिंदी विभागाध्यक्ष बन गए। उनके कुशल नेतृत्व में इस विभाग का विकास संपन्न होने लगा। हिंदी विभाग के पुस्तकालय को उर्वर बनाने का श्रेय वस्तुतः डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी को ही है। उन्होंने ही अपने कार्यकाल में इसे दक्षिण भारत के हिंदी विभागों में सबसे अच्छे पुस्तकालय के रूप में व्यवस्थित किया। सन् 1971 में ही अय्यरजी ने 'अनुशीलन' नामक विभागीय शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। पत्रिका के अतिरिक्त विभागीय प्रकाशन के रूप में कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। विभागीय पुस्तकालय की सुव्यवस्था, विभागीय शोध पत्रिका 'अनुशीलन' तथा विभागीय प्रकाशन योजना का श्रेय आचार्य विश्वनाथ अय्यरजी को ही है। सन् 1980 में कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के आचार्य व अध्यक्ष पद से विमुक्त होने के बाद उनका उर्वर लेखनकाल निरंतर शक्तिशील रहा। सन् 1920 को केरल के पालघाट में जन्मे विश्वनाथ अय्यरजी ने मातृभाषा तमिल के अतिरिक्त संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी और मलयालम को भी पाथेय बनाया। ललित निबंध जैसी सृजनात्मक विधा के अतिरिक्त अनुवाद की सैद्धान्तिक चिन्तनपरक कृतियाँ, कथानुवाद, जीवनी, संपादित कृतियाँ आदि उनकी बहुआयामी रचना-क्षमता के विलक्षण प्रमाण हैं। एक प्रश्न मेरे मन में बराबर उठता है कि संस्कृत में एम.ए. करके उस गरिमामय भाषा के सुपरिचित होते हुए भी उनकी तमाम रचनाओं में संस्कृत का प्रभाव उतना क्यों नहीं है जितना होना स्वाभाविक है, शायद् तमिल मातृभाषी होने के कारण या जनप्रिय भाषा में लिखना उनकी नीति रही हो, इदमित्थं मैं कुछ नहीं जानती।

केरल के हिंदी साहित्य के इतिहास में उनका ललित निबंधकार रूप सर्वाधिक उल्लेखनीय है। उनके ललित निबन्ध हैं – शहर सो रहा है, उठता चाँद डूबता सूरज, फूल और कांटे, सीढ़ी और साँप, घने केर तरु तले आदि। अनुवाद चिंतक के रूप में अकादमिक स्तर पर उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 'अनुवाद कला', अनुवादः भाषाएँ, समस्याएँ जैसी पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में है। यही नहीं, मलयालम से हिंदी में उपन्यास, कहानी तथा काव्य का अनुवाद करके उन्होंने हिंदी-मलयालम भाषा साहित्य और संस्कृति के बीच सेतुबंधन का कार्य किया।

डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी की अनूदित कृतियाँ तथा अनुवाद के सैद्धांन्तिक चिन्तनपरक रचनाएँ तुलनात्मक भारतीय साहित्य की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान हैं। यू.जी.सी. द्वारा भारतीय साहित्य को स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया तो भारतीय तुलनात्मक साहित्य की महत्ता प्रमाणित हो गई। स्वयं विश्वनाथ अय्यरजी ने हिंदी-मलयालम तुलनात्मक साहित्य पर ही सागर विश्व विद्यालय से सन् 1959 में पीएच.डी. उपाधि हासिल की। 'आधुनिक हिंदी और मलयालम कविता' शीर्षक शोध प्रबंध सन् 1970 प्रकाशित हुआ। इसमें सन् 1918 से 1947 तक के तीन दशकों में रचित हिंदी और मलयालम कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अवलोकन प्रस्तुत किया गया है। सन् 1962 में प्रकाशित 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' तथा 'केरल में हिंदी भाषा एवं साहित्य का विकास' – ये दोनों कृतियाँ हिंदी साहित्य के लिए हिंदीतर प्रांत केरल के योगदान को रेखांकित करनेवली हैं। इसके अतिरिक्त केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका 'केरल ज्योति' मासिक में धारावाहिक रूप से प्रकाशित 'सारस्वत प्रदक्षिणा' शीर्षक स्तंभ और 'अभयकुमार की आत्म कहानी' दोनों लोकप्रिय हुआ।

संपादकीय कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं क्योंकि उनमें अय्यरजी की मौलिक भूमिकाएँ साहित्यिक वैभव संपन्न हैं। विशेषकर दो संपादित रचनाएँ मेरी दृष्टि में अपेक्षतया ध्यातव्य हैं। वे हैं सन् 1963 में प्रकाशित 'केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार' तथा सन् 1971 में प्रकाशित 'केरल की वीरगाथाएँ'। इनमें 'केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार' सन् 1819 ई में जन्मे स्वातितिरुनाल महाराज द्वारा हिंदी में लिखित 37 गीतों का संकलन है जिसका दूसरा संस्करण सन् 2005 में 'महाराजा स्वाति तिरुनाळ् के हिंदी गीत' नाम से पुनः मुद्रित हुआ। इन गीतों में प्रयुक्त रागों के उल्लेख से प्रमाणित होता है कि डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी में संगीत के प्रति भी विशेष रुचि है। ताल-लय से युक्त इन गीतों की भाषा व्रज, खड़ीबोली एवं दक्खिनी हिन्दुस्तानी का मिश्रित रुप है। विषयानुसार गीतों का विभाजन भी उन्होंने किया है जैसे सामान्य भक्ति से संबन्धित, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीपरमेश्वर, देवी तथा उद्धव-गोपी संवाद संबन्धी। 'केरल की वीरगाथाएँ' उत्तर केरल के लोकगीतों पर आधारित है। इस पुस्तक की भूमिका के रूप में डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी ने केरल की वीरगाथाओं तथा केरल की परंपरागत शस्त्र-व्यायाम शिक्षा का परिचय प्रस्तुत किया है। हिंदी की वीरगाथाओं से केरल के उत्तरी लोकगीतों की आनुषंगिक तुलना की जा सकती है। वीरता और प्रेम के आदर्श पात्रों की हैसियत से केरल के उत्तरी गीत हिंदी की वीरगाथाओं की कोटि में आते हैं। तलवार, कटार, भाला, ढाल और अन्य सैकड़ों शस्त्रों की झंकार इन दोनों भाषाओं के वीरगीतों में गूँजती हैं। प्रेम और वियोग पर आह तथा आँसू भरनेवाली प्रेमिकाएँ तथा उनकी जान बचाने केलिए अपने प्राण देनेवाले वीरों की कथाएँ भी हम यहाँ पाते हैं। चुने हुए शूर वीरों के पुरुषार्थ और युद्ध कला का चित्रण भी इनमें मिलता है। जैसे प्रताप चंपतराय, दुर्गावती, चूड़ावत आदि वीरों की गाथा रोमांचकारी है वैसे ही केरल के उत्तर लोकगीतों में आनेवाले आरोमल चेकवर, तच्चोलि ओतेनन, चंतु आदि वीरों की गाथाएँ भी साहसपूर्ण हैं। युद्ध करने की प्रणाली में शायद्

स्थानीय भेद दिखाई देता है। हिंदी की वीर-गाथा और उत्तर के लोक गीत में जो अन्तर उल्लेखनीय मात्रा में दिखाई देता है, वह व्यापकता और जातिगत स्तर का है। राजस्थान बहुत बड़ा प्रदेश है जहाँ जोधपुर, पारवाड़, मेवाड़, जटपुर आदि कई राज्य और उनके राजा रहे हैं। उत्तर केरल गीतों में आनेवाले वीर केवल दो-चार हैं। राजस्थान में क्षत्रयत्व के कारण उन वीरों का जैसा सम्मान था वैसा समादर उत्तरी गीतों के नायकों को प्राप्त नहीं हो सका। वे सामाजिक, जातिगत एवं आर्थिक दृष्टि से सामान्य कोटि के रहे थे। संभवतः इसी पहलू के कारण केरल में उत्तरी लोकगीतों को वह सम्मान पीढ़ियों तक नहीं मिला जो मिल सकता था। उत्तर केरल के ग्रामवासियों ने ही इन्हें सुरक्षित रखा है। वे तच्चोलि और पुत्तूरम दोनों घरों को, अब भी श्रद्धापूर्वक देखते हैं।

केरल की संस्कृति तथा मलयालम साहित्य को हिंदी क्षेत्र केलिए सुपरिचित कराना डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी की सभी रचनाओं का मूल उद्देश्य विदित होता है। ललित निबन्ध, अनूदित रचनाएँ, संपादित कृतियाँ, जीवनी तथा अनुवाद के सैद्धान्तिक चिन्तनपरक कृतियों के विविध संदर्भों में उनका मूल लक्ष्य स्पष्टतया परिलक्षित होता है। वस्तुतः उनकी सारस्वत साधना का प्रमाण उनकी बहुआयामी रचनाएँ ही है।

♦ (पूर्व प्रोफेसर, कोच्चिन विश्वविद्यालय)
ईशावास्यम्,
पुलिमुगळ् रोड़
चङ्ङम्पुषा नगर (पोस्ट)
कोच्चि - 682033

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.24 के आगे)

11.डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर ने 'केन्द्र साहित्य अकादमी' कोलिए किस मलयालम उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद किया?
(अ) स्मारक शिलकल
(आ) रामराज बहुदूर
(इ) अरनाषिकनेरं
(ई) वेरुकल
12. 'स्मारक शिलकल' के मूल लेखक कौन हैं?
(अ) पुनत्तिल कुञ्ञब्दुल्ला
(आ) सी.वी.रामनपिल्लै
(इ) पारप्पुरम
(ई) सच्चिदानन्दन
13. 'मरुन्नु' मलयालम उपन्यास का डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर ने किस नाम से हिन्दी में अनुवाद किया?
(अ) औषध
(आ) औषधि
(इ) दवा
(ई) मरुन्नु
14.'एवेकन चिल्ड्रन' किनके भाषणों का अंग्रेज़ी अनुवाद है?
(अ) जवहरलाल नेहरू
(आ) माता अमृतानंदमयी
(इ) महात्मा गाँधी
(ई) डॉ.राधाकृष्णन

(शेष पृ.सं. 29)

मेरे गुरुवर की यादों में

♦प्रो.(डॉ) सुधा बालकृष्णन

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरूरदेवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

विश्वनाथ अय्यर जी मेरे जीवन को सही मार्गदर्शन देनेवाले एक महान हस्ताक्षर थे। अतीत के अध्यायों को पलटने पर याद आता है, 40 - 41 साल पहलेवाली वह घटना जब मैं जीवन के भविष्य और भविष्य के सपनों को संवारने के प्रति निश्चिंत होकर, बिंदास होकर जीवन के वर्तमान को मौज मस्ती के साथ जी रही थी। एम. ए हिंदी में दाखिला लेने का मेरा कोई इरादा नहीं था मैं फाइन आर्ट और Interior decoration course करना चाहती थी। मैंने आवेदन भेज दिया था। कला के प्रति रुचि बचपन से ही थी और अब भी है। उन्हीं दिनों मुझे कोच्चिन विश्वविद्यालय से एम.ए हिंदी का प्रवेश पत्र आया। मैं तो दंग रह गई। केरल में आने के पश्चात मैंने कहीं भी आवेदन पत्र नहीं भेजा था क्योंकि बचपन और जवानी के अच्छे दिन बाहर बिताने के बाद केरल में आकर मेरा दम घुट रहा था और उसके साथ हिंदी में एम.ए. करना मैं सोच भी नहीं सकती थी। क्योंकि मुझे याद है, बी.ए. रांची विमेंस कॉलेज में हिंदी की कक्षाएं बंक किया करती थी क्यों? पता नहीं उन दिनों हिंदी की कक्षाओं में बैठने को मेरा मन नहीं करता था तो ऐसे संदर्भ में हिंदी में एम.ए करना मेरे लिए एक नाइटमेयर के समान था। बाद में पता चला कि मेरे पापा ने एम.ए हिंदी में दाखिला के लिए विश्वनाथ अय्यर जी से पत्राचार किया था। क्योंकि रांची विश्वविद्यालय में रिज़ल्ट बहुत देर से निकलता या जबकि केरल के विश्वविद्यालय में प्रवेश समाप्त हो चुका होगा। विश्वनाथ सर ने मेरे प्रति उदारता दिखाई। उन्होंने प्रवेश पत्र भेजा।

अतीत के वो पल आज भी मेरे सामने चलचित्र के समान घूम रहे हैं मैं अकेली गई थी एडमिशन के लिए कोई भय नहीं था, क्योंकि स्कूल से लेकर कॉलेज तक एडमिशन प्रक्रिया को मैं खुद करती आई थी। इसी तरह से मैं कोच्चीन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कॉल लेटर लेकर अध्यक्ष के कमरे में पहुँच गई। विश्वनाथ जी अध्यक्ष पद पर बैठे थे। उसके चारों ओर अन्य गुरुजन बैठे थे। बड़े प्रेम भाव से मुस्कुराते हुए उन्होंने अंदर आने को कहा, मैंने उनको 'गुड मॉर्निंग' विश किया। सर को देखकर मुझे तसल्ली हुई, क्योंकि उनकी मुस्कुराहट में मुझे अपनापन का भाव दिखने लगा। हम सबको पता है उन दिनों प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष बड़े शांत हुआ करते थे। चेहरे पर शिकन और गंभीरता उनकी पहचान हुआ करती थी। लेकिन मैं अय्यर जी का हंसमुख चेहरा आज भी याद कर रही हूँ। मुझे अकेला देखकर उन्होंने पूछा,"तुम अकेली आई हो!" तो मैंने कहा,"जी सर"। तब अय्यर सर ने मुस्कुराते हुए कहा,"तुम्हें अपने पेरेंट्स को साथ लाना चाहिए था।" मुझे बहुत अजीब-सा लगा कि एडमिशन में पेरेंट्स का होना क्या तुक है ? बाद में पता चला कि केरल में

विद्यार्थियों के आगे पीछे उनके अभिभावक ही भाग दौड़ करते हैं। फिर सर जी के कहने पर मैंने वहीं से घर पर फोन कर पिताजी को बुला लिया, आधे घंटे के बाद पिता जी आए और हम दोनों फिर से अय्यर जी के कमरे में इंटरव्यू के लिए गए। अय्यर सर और मेरे पिताजी के बीच बहुत सारी बातें हुई। उसी मुस्कुराहट के साथ उन्होंने कहा,"आई एम इंटरेस्टड फॉर यूवर एडमिशन"। क्योंकि तुम रांची यूनिवर्सिटी से हो यहाँ एडमिशन लेकर हिंदी सीखाओं। इस तरह कोच्चिन विश्वविद्यालय मैंने हिंदी में एडमिशन लिया। विश्वनाथ जी की वजह से मुझे वहाँ एडमिशन मिला। आज मैं जो कुछ हूँ परम पूजनीय विश्वनाथ अय्यर जी की बदौलत और मेरे पूजनीय गुरुजनों की वजह से। हम विद्यार्थियों को सवारने में हमारे गुरुजनों ने अथक प्रयास किए हैं। आज केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर और अध्यक्ष पद पर आसीन होते हुए। मैं अपने गुरुजनों के प्रति नतमस्तक हूँ जिनमें डॉ. विश्वनाथ अय्यर सर शीर्ष पर हैं, उसके बाद प्रोफेसर देव और डॉक्टर एस. शाहजहां जो मेरे गाइड और फ्रेंड थे। डॉ. अरविंदाक्षण जी से मैंने आलोचना की रीति सीखी, डॉ. शमीम अलियार लिया, डॉ सुनीता बाई, डॉ पीवी विजन आदि गुरुजनों की छत्रछाया में बढ़ने का मुझे अवसर मिला। विश्वनाथ अय्यर जी मुझे बहुत प्यार किया करते थे। मुझे एक बेटी मानकर भविष्य को सवारने का सकारात्मक उपदेश देते थे। उत्तर भारत से आने के बाद केरल मुझे नीरस लगता था और मैं हिंदी छोड़ना चाहती थी। दो तीन बार मैं इस मुद्दे को लेकर डॉ.विश्वनाथ अय्यर और विजयन सर के पास गई। लेकिन दोनों गुरुजनों ने मुझे प्रेम से समझाया कि "तुम्हारा भविष्य उज्जवल है। तुम लेक्चरर जरूर बनोगी।"

आज मैं वृद्धावस्था के पहले पड़ाव पर हूँ और याद करती हूँ अय्यर जी की षष्ठी पूर्ति समारोह का दोपहर का भोजन जो हम एरणाकुलम होटल में हम लोगों ने किया था। और आज के इस माहौल में मैं उन स्थितियों को अय्यर जी के दिन को अनदेखा नहीं कर सकती। जिन्होंने मेरे व्यक्तित्व को संवार दिया मैं उनके समक्ष उनकी याद रूपी श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ।

♦ विभागाध्यक्षा
हिन्दी विभाग,
केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय,
कासरगॉड जिला।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.27 के आगे)

15.'अनुवाद कला' पुस्तक के रचनाकार कौन हैं?

(अ) कैलाशचन्द्र भाटिया

(आ) भोलनाथ तिवारी

(इ) मोटूरी सत्यनारायण

(ई) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

सही उत्तर

(1) ई	(2) ई	(3) इ	(4) ई
(5) इ	(6) ई	(7) अ	(8) आ
(9) आ	(10) अ	(11) अ	(12) इ
(13) आ	(14) ई	(15) आ	

हिन्दी साहित्य साधक डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी

♦ डॉ.उमा कुमारी.जे

हिन्दी के मौलिक लेखक, सफ़ल अनुवादक एवं कुशल अध्यापक के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी का जन्म सन् 1920 में केरल के पालक्काटु नामक जिले के एक तमिल ब्रह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता श्री ईश्वर अय्यर और माता श्रीमती आनन्दलक्ष्मी थीं। उनके दो भाई और एक बहन थीं। छोटा भाई डॉ.एन.ई.मुत्तुस्वामी अय्यर सरकारी कॉलेज में हिन्दी प्रोफेसर थे। संस्कृत भाषा और ज्योतिष शास्त्र के रचयिता भी थे।

विश्वनाथ अय्यरजी की प्राथमिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। जब वे आठ वर्ष के थे, पिताजी की मृत्यु हुई और माँ अपनी चार संतानों के साथ तिरुवनन्तपुरम पहुँची। यह बड़े सौभाग्य की बात थी कि संस्कृत पढ़ने का अवसर उन्हें यहाँ प्राप्त हुआ जो भविष्य में हिन्दी की पढ़ाई में बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। हिन्दी और संस्कृत में एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्तकर उन्होंने 'सागर विश्वविद्यालय' से हिन्दी में पी.एच.डी की उपाधि भी प्राप्त की।

उनकी पत्नी श्रीमती अलमेलु हँस मुख, सरल स्वभाववाली और दानशील थीं जो अतिथि- सत्कार में बड़े ही चाव रखती थीं। बड़ी बेटी श्रीमती जयंति अध्यापिका के पद से और छोटी बेटी श्रीमती उषा पुस्तकालय अध्यक्षा के पद हो सेवनिवृत्त हुई हैं।

उन्होंने केरल के विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर कॉलेजों में 19 वर्ष तक अध्यापन का कार्य किया। जब वे तिरुवनन्तपुरम के यूनिर्वेसिटी कॉलेज में थे, केरल विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग एरणाकुलम में प्रारंभ हुआ। इस केन्द्र की स्थापना, हिन्दी विभाग का एरणाकुलम में प्रारंभ आदि में डॉ.ए.चन्द्रहासनजी का बड़ा हाथ रहा। वे 'महाराजस कॉलेज' के प्रिन्सिपल के पद से सन् 1962 में अवकाश प्राप्त हुए थे। चन्द्रहासन जी ही केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं रीड़र नियुक्त हुए। उन्होंने हिन्दी भाषा की अतुल्य प्रतिभा डॉ.एन.ई.विश्ववनाथ अय्यरजी को रीड़र के पद पर नियुक्त किया। डॉ. मालिक मुहम्मद भी उस समय अध्यापक नियुक्त किए गए। इन तीनों कर्मकुशल, समर्थ अध्यापकों के नेतृत्व में केरल विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग एरणाकुलम के महाराजस कॉलेज के एक छोटे मकान में शुरू हुआ। आठ वर्ष तक वे यहाँ काम कर सके। जब सन् 1971 में यह विभाग कोच्चिन विश्वविद्यालय में जुड़ा दिया गया तो नौ वर्ष तक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के पद संभालने का सौभाग्य भी अय्यरजी को प्राप्त हुआ। अंतिम तीन वर्षों में भाषा संकाय के डीन भी बन सके। उन्होंने कोच्चिन विश्वविद्यालय में कई पी एच.डी छात्रों का सफ़लतापूर्वक शोध-निर्देशन किया। दक्षिण और उत्तर के अनेक विश्वविद्यालयों में परीक्षक, शोध-ग्रन्थ परीक्षक आदि रहे हैं। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में बोर्ड ऑफ

स्टडीस, सेनट आदि के सदस्य, केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की सलाहकर समिति के सदस्य आदि बनने का अवसर भी उन्हें मिला है।

कोच्चिन के हिन्दी के विकास में 'केरल हिन्दी साहित्य मंडल' का उल्लेखनीय स्थान है। सन् 1969 - 70 में 'केरल हिन्दी साहित्य मंडल' स्थापित हुआ तो उसके अध्यक्ष डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी रहे। सन् 1972 -73 में 'केरल हिन्दी साहित्य मंडल' ने 'साहित्य मंडल पत्रिका' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रारंभ की। इस पत्रिका का संपादन प्रथम तीन वर्षों तक अय्यरजी ने किया। कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यापकों एवं वरिष्ठ शोध छात्रों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने की सुविधा केलिए सन् 1971 में 'अनुशीलन' नामक एक शोध पत्रिका भी निकाली गयी।

श्रेष्ठ हिन्दी सेवा केलिए नागपुर में आयोजित 'प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन' में वे सम्मानित हुए और मॉरिशस के विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त हुए। विशिष्ट हिन्दी सेवा केलिए उत्तर प्रदेश के 'सौहद पुरस्कार', 'आनन्द ऋषि साहित्य पुरस्कार', 'माता कुसुमकुमारी पुरस्कार', 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' आदि कई श्रेष्ठ पुरस्कारों से उनकी प्रतिभा सम्मानित हुई है।

मौलिक रचनाएँ : होनहार बालक और अन्य कहानियाँ, हिन्दी रचना मित्र, स्वतंत्र हिन्दी बोधिनी, निबंधोपहार, मलयालम - हिन्दी व्यावहारिक कोश, महाकवि रवीन्द्रनाथ, केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार, राष्ट्रभारती को केरल का योगदान, प्राचीन कवि केशवदास, आधुनिक हिन्दी काव्य तथा मलयालम काव्य, शहर सो रहा है, उठता चांद डूबता सूरज, फूल और काँटे, केरल की लोककथाएँ, व्यापारिक और प्रशासनिक पत्र - व्यवहार, अनुवादः भाषाएँ, समस्याएँ, अनुवादकला, व्यावहारिक अनुवाद, उभयकुमार की आत्मकहानी, केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदि उनकी धन्य तूलिका से निकली अमर कृतियाँ हैं।

अनूदित कृतियाँ : जड़ें, आधी घड़ी, रामराज बहादुर, मरण सर्टिफिकट, दवा, स्मृति शिलाएँ एक किशोरी फुलझड़ी-सी, नये आस्मान नयी धरती आदि।

डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी का नाम सुनते ही एक समर्थ एवं आदर्श अध्यापक, सफल अनुवादक एवं कुशल ललित निबंधकार- इन तीनों रूपों में उनका भव्य चित्र स्मृति मंडल पर शोभा पाता है। अध्ययनशील एवं प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डॉ. विश्वनाथ अय्यरजी ने अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर अपनी एक अलग पहचान बना ली है। अनुवाद के विविध पहलुओं पर डॉ. भोलानाथ तिवारी ने बड़ी संख्या में ग्रन्थ लिखे और लिखवाए, मगर व्यावहारिक अनुवाद के विषय में कम ही लिखा गया है। इस कमी को दूर करने केलिए ही उन्होंने 'अनुवाद : भाषाएँ, समस्याएँ', 'व्यावहारिक अनुवाद', 'अनुवाद कला' आदि महत्वपूर्ण एवं ज्ञानगर्भित कृतियों की रचना की। स्वयं एक अनुवादक होने के नाते अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयाँ तो जानते अवश्य हैं और ये अनुभव इन रचनाओं के सृजन में सहायक भी हुए हैं। अकादमिक स्तर पर अनुवाद - सिद्धांत एवं व्यवहार को अध्यापन का विषय बनाने की आवश्यकता करीब 56 वर्ष पहले ही हिन्दी क्षेत्र में विशेषज्ञों को महसूस हुई थी। इस दिशा में उत्तर भारत में दिल्ली विश्वविद्यालय ने और दक्षिण में केरल विश्वविद्यालय ने ही हिन्दी में अनुवाद पाठ्यक्रम प्रारंभ किया। हिन्दी एम.ए.के विद्यार्थी द्वितीय वर्ष में एक

'सर्टिफिकट कोर्स इन ट्रानस्लेषन' नामक कोर्स भी पढ़ने लगे। उसकेलिए अलग प्रमाण पत्र भी उन्हें दिया जाता था। इसके संचालन का दायित्व अय्यरजी पर ही निर्भर था।

विश्व में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। जितने देश हैं, उनसे कई गुना भाषाएँ भी हैं। सभी देशों की भाषाएँ महत्वपूर्ण भी होती हैं। इस प्रकार अलग - अलग भाषाओं के होने से विभिन्न क्षेत्रों, देशों एवं संस्कृतियों में अलगाव दिखाई पड़ना सहज ही है। लेकिन अनुवाद के माध्यम से इसमें परस्पर सम्बन्ध बनाया जा सकता है। अनुवाद बड़ा ही जटिल कार्य है, जिनकेलिए अनुवाद-कला की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक जानकारी अपेक्षित है। इसी उद्देश्य की पूर्ति केलिए अय्यर जी ने कई पुस्तकों की रचना की है, जिनमें मुख्य है - 'अनुवादः भाषाएँ, समस्याएँ'।

कोच्चिन विश्वविद्यालय में सैद्धांतिक और व्यावहारिक अनुवाद पढ़ाने का अवसर मिला तो उस विषय पर गहरा अध्ययन करने की इच्छा उनके मन में जगी। 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' की आर्थिक सहायता भी मिली तो उनका अनुसंधान बड़ी ही सफ़लता पायी। आर्थिक सहायता भी मिली तो उनका अनुसंधान बड़ी ही सफ़लता से पूर्ण हुआ। 'अनुवादः भाषाएँ, समस्याएँ' नामक इस पुस्तक का लेखन दो खंडों में हुआ है। प्रथम खंड में अनुवाद की परंपरा, उत्तर भारतीय साहित्य के अनुवाद का मापदंड़, तकनीकी भाषा का अनुवाद आदि शीर्षक हैं। दूसरे खंड़ में द्राविड़-हिन्दी के परस्पर अनुवाद की चर्चा है। यद्यपि विस्तार और उदाहरण केलिए द्राविड़ की प्रतिनिधि भाषा मलयालम को ही प्रमुखता दी गई है तो भी विस्तृत व्याकरणिक चर्चा में तमिल, मलयालम, संस्कृत और अंग्रेज़ी की व्याकरणिक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विवेचन एवं अध्ययन पर बल दिया गया है। इसलिए मलयालम को छोड़ अन्य द्राविड़ भाषाओं के प्रेमी भी अपनी भाषा से हिन्दी में अनुवाद की समस्या का समाधान पा सकेंगे।

इस पुस्तक के पहले भाग में लिप्यंतरण की समस्या, द्विभाषिकता की समस्या आदि पर विस्तृत विवरण है जिससे कि अनुवाद के क्षेत्र में पहली बार पैर रखनेवाले भी आसानी से अपना काम पूरा कर सकेंगे। अनुवादक को अनुवाद करते समय अनेक व्यावहारिक समस्याओं से जूझना पड़ता है और इस अवसर पर उन्हें ये मार्गदर्शन बहुत सहायक सिद्ध होंगे। अनुवादक केलिए चुनौती पैदा करनेवाली एक प्रमुख बात 'बोली' है। भूगोल, काल सामाजिक पृष्ठभूमि आदि तीन कसौटियों पर आधारित 'बोली' के अनुवाद की समस्या भी इसमें चर्चा का विषय बन गयी है। तकनीकी भाषा का अनुवाद, अनुवाद की गुणवत्ता, भारत में अनुवाद का अतीत इतिहास, अनुवाद का वर्तमान युग आदि कई छोटी - छोटी, मगर गंभीर बातों पर विशद अध्ययन इस पहले भाग में हुआ है।

दूसरा भाग है 'अनुवाद : व्यवहार तथा विश्लेषण'। इसमें अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद, द्राविड़ भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करते समय होनेवाली समस्याएँ, अनुवाद की दृष्टि से हिन्दी की वाक्य-रचनाएँ, हिन्दी के मुहावरे, हिन्दी की कहावतें आदि पर विशद अध्ययन है। व्याकरणीय समस्याओं का विशद चित्रण इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद के समय महसूस होनेवाली कई समस्याएँ हैं। भारत में अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेज़ी भाषा के व्याकरण की प्रणाली को भारतीय भाषाओं ने भी स्वीकार किया है। लेकिन अंग्रेज़ी वाक्यों

का अनुवाद करते समय अंग्रेज़ी की अपनी व्याकरणिक विशिष्टताओं पर ध्यान देना आवश्यक है। व्याकरण जिस क्रम से चर्चित है, उसी क्रम से इस पुस्तक में अनुवाद सम्बन्धी विशेषताओं या कठिनाइयों की चर्चा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए की गई है। यहाँ लेखक की भाषाई चतुराई या जानकारी हमें अवश्य प्राप्त होती है।

अनुवाद कला : इस पुस्तक की भूमिका में डॉ.विश्वनाथ अय्यर जी इस रचना की प्रेरणा के सम्बन्ध में यों बताते हैं - "मैं स्वयं मलयालम से हिन्दी में अनुवाद कर रहा हूँ। अपने अनुभव के दौरान मैं ने अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयाँ जानने की कोशिश की है। उसमें जो बातें उभरकर सामने आयी हैं उन्हें इस ग्रन्थ में समाने का प्रयास मैं ने किया है।" इसमें भाषा के उद्भव व विकास से लेकर अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक अध्ययन की पृष्ठभूमि में महत्व रखनेवाले सारे तत्वों और गुण - दोषों पर विस्तार से अध्ययन हुआ है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक युग में विज्ञान, समाज - विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित आदि अनेक विषय सीखे और सिखाए जाते हैं। ये सारी पुस्तकें एक ही भाषा में लिखित नहीं होतीं। उनका अनुवाद सभी भाषाओं में करना ज्ञान की वृद्धि केलिए अनिवार्य हो जाता है। इसप्रकार सांस्कृतिक सम्बन्धों केलिए अनुवाद की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान और तकनॉलजी के महत्व की माँग दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। संचार माध्यमों (रेड़ियो, टेलिविज़न, समाचार पत्र आदि) के अनुवाद का महत्व भी बहुत विस्तृत तरीके से इस पुस्तक में बताया गया है। साहित्यिक क्षेत्र में अनुवाद इसलिए महत्वपूर्ण माना गया है कि इससे विभिन्न दोशों की भाषा, रहन-सहन, आदान- प्रदान, संस्कृति आदि से हम परिचित हो जाते हैं। अनुवाद के प्रकारों का विभजन भी बहुत ही सटीक ढंग से इस ग्रन्थ में किया गया है। अर्थपक्ष के अंतर्गत अनुवाद के चार मुख्य भेद हैं - शाब्दिक अनुवाद, शब्द-प्रतिशब्द अनुवाद, भावानुवाद और छायानुवाद। इन चारों का विस्तृत अध्ययन उदाहरणों सहित हुआ है, जो साधारण पाठक या छात्र आसानी से समझ सकते हैं। इसके अलावा अनुवाद का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण, आदर्श अनुवादक के गुण, पश्चिमी और भारतीय दोनों चिंतनों के आधार पर अनुवाद के अर्थ-विचार, अनुवाद में मातृभाषा का प्रभाव, पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद में आनोवाली समस्याएँ आदि सारे विषयों का बृहद् अध्ययन यहाँ प्रस्तुत है। 'अनुवादकला' अय्यर जी की बहुचर्चित रचनाओं में एक है।

3. व्यावहारिक अनुवाद: स्वतंत्रता - प्राप्ति के बाद भारतीय भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन में नयी भूमिका मिलने लगी। प्रशासन में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग और प्रगामी प्रयोग पर ज़ोर दिया गया। अनुवाद का महत्व पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया। भारतीय भाषाओं में संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथों के अनुवाद की परंपरा प्राचीन काल से प्रचलित रही। मगर अनुवाद को एक अध्ययन विषय बनने का सौभाग्य आधुनिक युग में ही प्राप्त हुआ। अनुवाद-चिंतन के विकास के कारणों में मुख्य है प्रयोजनमूलक भाषा का विकास। आधुनिक युग में भाषा की प्रयोजनमूलकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अनुवाद व्यावहारिक विषय है।

'अनुवाद एक पेशा' नामक अध्याय में पश्चिम में 'कॉन्फेरंस ट्रांसलेटर' नामक तकनीकी पेशे के विकास की चर्चा की गई है। भाषांतरण, भाषांतरण की प्रक्रिया, भाषांतरकार की सफलता केलिए आवश्यक गुण,

भाषांतरकार की वेशभूषा और व्यवहार, समस्याएँ आदि की विस्तृत चर्चा इस अध्याय में है। आधुनिक काल में व्यापार और औद्योगिक जगत का वैश्वीकरण होता जा रहा है। इसलिए इन क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है।

काव्यानुवाद के खट्टे - मीठे अनुभवों पर भी लेखक प्रकाश डालते हैं। कविता लिखना जितना श्रमपूर्ण कार्य है, काव्यानुवाद भी उतना ही दुष्कर कार्य माना जाता है। 'मलयालम - हिन्दी अनुवादः विकास कथा' नामक अंतिम अध्याय में हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं को अनुवाद द्वारा निकट लाने के प्रयास में निरत कुछ मलयालम के और इतर भारतीय भाषाओं के लेखकों का उल्लेख किया गया है। उनमें पहला नाम श्री अभयदेव का है। उन्होंने 'कोट्टयम' में 'हिन्दी प्रकाशन सहकारी संघ' प्रारंभ किया। पं. नारायणदेव, पी.जी. वासुदेव और अन्य कई मित्रों के सहयोग से ही यह सहकारी संघ स्थापित हुआ। हिन्दी-मलयालम दोनों भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। मलयालम के प्रतिनिधि ग्रन्थों का अनवाद तथा प्रकाशन इनका मूल लक्ष्य था।

दूसरे उल्लेखनीय व्यक्ति लक्ष्मणशास्त्री थे। वे केरल के 'वैक्कम्' में जन्मे थे, बाद में दिल्ली में बस गए। साम्यवादी विचारधारा पर अमुक रुचि रखनेवाले थे और तोप्पिलभासि जैसे ख्याति प्राप्त नाटककारों के कृतित्व का यश उत्तर में भी पहुँचाने के उद्देश्य से इन्होंने इन नाटकों का अनुवाद हिन्दी में किया। तीसरा उल्लेखनीय व्यक्तित्व स्वर्गीय भारती विद्यार्थी का है। पूरा नाम के. भारतीअम्मा है। एरणाकुलम में जन्मी भारतीअम्मा हिन्दी बड़े तात्पर्य से पढ़ती थी, उसी समय बिहार के पं.देवदूत विद्यार्थी हिन्दी प्रचार का संगठन कर रहा था। पहले भारतीअम्मा ने उन्हें गुरु के रूप में स्वीकार किया, बाद में भारती जी का विवाह उनके साथ हो गया। सफल मलयालम-हिन्दी अनुवाद के प्रथम प्रवक्ता के रूप में श्रीमती भारती विद्यार्थी स्मरण रहेंगी। इनके साथ आनेवाला और एक नाम है रत्नमयी दीक्षित। रत्नमयी केरल की हैं और दीक्षितजी उत्तर भारतीय।

इसप्रकार इस अध्याय में प्रमुख अनुवादक प्रकाशक, संस्था आदि का विस्तृत चित्र देकर अनुवाद कला की श्रेष्ठता और महत्ता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है।

केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास

हिन्दी का प्रचार आदि से सम्बन्धित अनुभव-ज्ञान उन्होंने इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक पाँच खंड़ों में विभाजित की गयी है, जैसे-

(1) केरल एवं हिन्दी भाषा

(2) हिन्दी प्रचार

(3) हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण

(4) उच्चतर हिन्दी अध्ययन एवं शोध

(5) हिन्दी में मौलिक एवं अनूदित हिन्दी साहित्यः हिन्दी पत्रिकाएँ।

हिन्दी की विकास-यात्रा प्रस्तुत करनेवाली यह कृति हिन्दी का ज्ञान सागर-सा दिखाई पड़ता है। पूरे केरल की हिन्दी की गतिविधियों का इतिहास कहीं भी कुछ छूटे बिना प्रस्तुत करने का कठिन कार्य विश्वनाथ अय्यरजी ने अत्यंत सरल एवं सरस शैली में किया है। वास्तव में यह एक ऐसा बहुमूल्य शोध ग्रन्थ या सन्दर्भ ग्रन्थ है जिससे छात्र, शोधछात्र, एवं अध्यापक गण लाभ उठा सकते हैं। हिन्दी भाषा का विकास, हिन्दी सस्थाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रमुख हिन्दी केन्द्र, हिन्दी प्रचारक, अध्यापक, हिन्दी की पढ़ाई चलनेवाले कॉलेज,

विश्वविद्यालय, हिन्दी लेखकों द्वारा रचित उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, निबंध, आलोचना आदि भी इस गहन अध्ययन के अंतर्गत आते हैं। हिन्दी भाषा के उदय से वर्तमान समय तक की गतिविधियों का सच्चा एवं जीवंत चित्र इस ग्रन्थ से प्राप्त होता है। तिरुवनन्तपुरम से लेकर केरल के हिन्दी अध्ययन, अध्यापन एवं प्रचार में मग्न सभी नगरों, गाँवों, संस्थाओं का परिचय देते हुए उत्तर की ओर बढ़नेवाला लेखक बाल का खाल उतारते हुए हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालता है।

निबंध : डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी के निबंध जीवनानुभवों पर आधारित है। कई निबंध संस्मरण के रूप में भी लिखे गए हैं। उनका पहला निबंध संग्रह है 'शहर सो रहा है'। इस निबंध संग्रह के पहले निबंध का शीर्षक भी यही है। इसमें अठारह निबंध समाहित हैं। रात के सन्नाटे में केरल के तिरुवनन्तपुरम नामक सुन्दर नगर में चक्कर लगाते हुए लेखक उसका प्राचीन वैभव, ऐतिहासिक महत्व आदि पर सोचते हैं। वे राज शासन के अच्छे दिनों की यादें कर रहे हैं, साथ ही अंग्रेज़ी द्वारा किए अन्यायों, आज की सामाजिक कुरीतियों आदि का यथार्थ चित्रण अत्यंत सजीव ढंग से करते हैं।

'कल्पना की छाया में' नामक लेख में कई लोगों को धनी बनानेवाला, पास आनेवालों को छाया और मनचाहा वर देनेवाला यह वृक्ष स्वर्ग के कल्पतरु से भी महान बताया गया है। 'सावन आया रे' में सावन के आने का सन्देश देनेवाली सुकोमल प्रकृति एवं खेत की फसल लेने के उमंग से प्रफुल्लित वातावरण आदि का वर्णन है। 'दिन-दिन में दिवाली' में केरल के गंभीर वाणिज्यिक इतिहास को अपने में छिपाए स्थित कोच्चिन नगर का वर्णन है। सन्ध्या वेला में अरब सागर रूपी रानी अधिक सुन्दर दिखाई पड़ती है। सागर के किनारे के भव्य नगरों में जलायी जानेवाली ज्योति का प्रतिबिंब उस जल राशि पर पड़ता है तो आँखो केलिए वह एक अद्‌भुत दृश्य बन जाता है। केरल में विशेष रूप से मनाये जानेवाले विषु पर भी एक अमुक लेख है। विषु नए वर्ष के वैभवशाली होने की प्रार्थना का पर्व है। साथ ही कृषि-प्रधान केरल में कृषि पर्व के रूप में ओणम की तरह यह मनाया जाता है। अनेक फलों-फूलों से सजे हुए वृक्षों के बीच में राजा की तरह विराजमान 'कनेर' इस मौसम की शोभा सौ गुना बढ़ा देता है। उस कनेर का वैभव वर्ष भर देश भर में रहे और लोगों के मन को उसी तरह संतुष्ट कर दें, यही लेखक की प्रार्थना है। इसी प्रकार इस संग्रह के अन्य लेख भी एक से एक बढ़कर लेखक की चिंता-शक्ति एवं इच्छाशक्ति के प्रमाण हैं। 'प्रथम पृष्ठ और अंतिम भी' में आज के छात्रों में दिखाई पड़नेवाली अनुशासनहीनता पर दुःख प्रकट किया गया है। इसमें विद्यार्थियों के पंचलक्षण, विद्या का महत्व, विद्या शब्द की उत्पत्ति, उसका अर्थ आदि बड़े ही सरल ढंग से बताए गए हैं। पुराने समय में विद्यामान कैसे थे, उनका ज्ञान कैसे काम में लाया जाता था आदि बातें बतायी गयी हैं। अध्यापक और छात्र के पवित्र सम्बन्ध पर ज़ोर देनेवाला लेखक राजनीति को विद्यापीठों से हमेशा दूर रखना ही चाहते हैं। उनकी सशक्त धारणा है कि छात्र के ज्ञानी होने में ही अध्यापक की सफ़लता है।

डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी के 'ललित निबंध' ज्ञानवर्द्धक, चिंता-प्रधान एवं उत्साहवर्द्धक हैं। गंभीर विषय को भी अत्यंत सरल ढंग से कहना उनकी विद्वत्ता एवं कुशलता का द्योतक है। वैविध्यों द्वारा उनके निबंध जिज्ञासु पाठकों केलिए ज्ञानदायक एवं लाभदायक हैं।

लेखक ने प्रस्तुतीकरण की जो शैली अपनायी है वह पाठकों केलिए ग्राह्य है। विस्तार में न जाकर संक्षेप में, किंतु स्पष्ट रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने की उनकी अद्‌भुत क्षमता है।

फूल और काँटे: इस संग्रह का पहला निबंध है 'आप क्यों हँसते हैं'। इसमें छोटे नादान बच्चे से लेकर ज़िन्दगी की सन्ध्या पर पहुँचे हुए बूढ़ों तक की हँसी की खासियत बतायी गयी है। यह एक सत्य है कि उम्र के साथ - साथ हँसी भी क्षीण हो जाती है। अत्यंत ललित, मगर चुभती वाणी में लेखक साबित करते हैं कि कडुए मुँह के लोगों से कोई प्रीति नहीं रख सकता। तुलसी की निम्न पंक्तियों को भी वे उदाहरण केलिए प्रस्तुत करते हैं -

"आवत ही हरषै नहीं नैनन नहि सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरस मेह।।

इस संग्रह का सबसे सारगर्मित निबंध 'फूल और काँटे' है। ज़िन्दगी में सुख- दुःख की आँख-मिचौनी होती रहती है। दिन-रात जिस प्रकार आते-जाते रहते हैं उसी प्रकार सुख और दुःख जीवन में आते-जाते ही रहेंगे। नई पीढ़ी से लेखक का उपदेश या संदेश यह है कि जो असाध्य को साध्य बनाना चाहता है, कंकड़-पत्थर की चिंता किए बिना आगे बढ़ना चाहता है वही ज़िन्दगी में कुछ पा सकेगा।

'या पाए बौराय' नामक निबंध में वित्त के प्रतीकों में सबसे सशक्त सोने का महत्व, उसे पा लेने की कठिनाई, स्वर्ण खान कोलार से सोने की प्राप्ति आदि बहुत ही ज्ञानवद्धक बातें बतायी गयी हैं। 'आ जा रे परदेशी' में कोच्चिन नगर का वर्णन है। नये नागरिक संस्कार और पुराने ग्रामीण संस्कार का अंतर बताने के साथ ही पुराने सुन्दर शिल्पों, तिमंजिले पुराने महलों आदि का भी आँखों देखा सजीव वर्णन इसमें हुआ है। यहूदी बस्तियाँ, पुरानी वास्तुशैली पर बनाए गए गिरजाघर आदि भी इस निबंध के मुख्य आकर्षण हैं।

इस प्रकार विविध विषयों पर भिन्न - भिन्न अवसरों पर लिखे गए निबंधों का संग्रह है 'फूल और काँटे'। इसके हर एक निबंध सरस, मगर पुष्ट और सरल शैली में लिखे हुए हैं। संक्षेप में बता सकते हैं कि डॉ.एन.ई विश्वनाथ अय्यर जी सुलझे हुए विचारक एवं चिंतक ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषागत समस्याओं पर विचार करनेवाले एक मौलिक लेखक भी हैं। संस्कृतनिष्ठ, उच्च साहित्यिक भाषा-शैली उनके निबंधों को गौरव प्रदान करती है। वक्ता, आलोचक, निबंधकार, अध्यापक आदि विभिन्न क्षेत्रों में लब्धप्रतिष्ठ डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी व्याकरण, संस्कृत, भारतीय संस्कृति आदि में रुचि रखनेवाला एक निष्ठावान हिन्दी सेवक हैं। वे संकल्प और श्रम का एक मणि-कांचन संयोग हैं। वे जिस कार्य को काम में लेते हैं उसे संपन्न किए बिना विश्राम नहीं लेते थे। उनका यह विशिष्ट गुण अपना शिष्य समूह एवं अगली पीढ़ी केलिए निश्चय ही नमूना ही है। ऐसे ही कर्मशील व्यक्ति को लक्ष्य करके ही भर्तृहरि ने कहा होगा :-

"प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः
प्रारम्भ विघ्न विहता विरमान्ति मध्याः।
विघ्नै पुनः प्रतिपत्यमानाः
प्रारभ्य उत्तमजनाः न परित्यजान्ति।।

◆ पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
केरल विश्वविद्यालय
कार्यवट्टम।

आदरणीय गुरुवर विश्वनाथ अय्यर जी

♦ एस. विजय कुमार

अपने आदरणीय गुरुवर आचार्य एन.ई.विश्वनाथ अय्यर की कीर्ति हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। उनका व्यक्तित्व जितना आकर्षक था, कृतित्व उतना ही गंभीर था। उनकी साहित्य- सेवा पर कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं, इसलिए उस पहलू पर मैं नहीं जाता। उस महाप्रतिभा का परिचय पाये तथा उनसे मिले संदर्भों की याद करना मात्र मेरे इस लेख का उद्देश्य है।

'केरल भाषा इंस्टिट्यूट' के सेवा काल में मुझे हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने का तात्पर्य हुआ। पी.जी.उपाधि की प्राप्ति मेरी एक वाँछा मात्र नहीं थी, वरन् अपने दफ़्तरी जीवन की प्रगति केलिए आवश्यक भी था। मैं किसी अध्ययन केन्द्र की खोज में था कि विद्याधिराजा स्कूल में सायाह्न स्नातकोत्तर पठन केन्द्र शुरू करने का पता चला। वहाँ पहुँचा तो बहुभाषा पंड़ित डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी से मेरी पहली मुलाकात हुई। तब विद्याधिराज विद्यामंदिर के स्थापक तथा केरल सरकार के पूर्व मुख्य सचिव डॉ.आर.रामचन्द्रन नायर जी भी उनके साथ थे। हिन्दी स्नातकोत्तर कक्षा में प्रविष्टि केलिए वहाँ मात्र मैं आया था। एक अध्येता से कक्षा शुरू करने की कठिनाइयों की चर्चा हुई। आखिर ऐसी स्थिति हुई कि अय्यर जी सहमति दें तो हिन्दी कक्षा शुरू हो जाए। तत्क्षण अय्यर जी ने हामी भरी। अपने कॉलेज अध्ययन के समय मैं ने अय्यर जी के बारे में खूब सुना था। हिन्दी में पीएच.डी उपाधि प्राप्त प्रथम केरलीय डॉ.के.भास्करन नायर जब तिरुवनन्तपुरम के यूनिवर्सिटी कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे तब उस विभाग के समर्थ अध्यापक रहे थे एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी। फिर वे अवकाश-प्राप्ति तक कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष रहे। बहुभाषापंड़ित तथा सृजनात्मक साहित्यकार अय्यरजी को गुरु-रूप में प्राप्त होने की अपनी खुशी मैं शब्दों से प्रकट नहीं कर सकता। अय्यर जी की प्रिय शिष्या तथा शोध छात्रा रही लता जी भी उस स्नातकोत्तर केन्द्र में सह अध्यापिका नियुक्त हुईं। फिर छात्रों की संख्या बढ़कर चार बनी। ऐसा कहना ठीक होगा कि परस्पर स्नेह-विश्वास का वह अध्ययन काल अकादमिक साहित्यिक विषयों की चर्चा का था।

देखने में अय्यर जी गंभीर स्वभाव के मालूम होते थे। पंड़ितोचित गंभीरता तथा बर्ताव। घुलने-मिलने से ही उस पंड़ितवर के स्नेह-वात्सल्य की सही पहचान होती थी। सामान्यतया मितभाषिता, सरल जीवन-शैली, आशय गंभीर भाषा चतुराई, लेखन तथा कथन में निजी शैली आदि उनकी विशेषताएँ रहीं। कक्षा में उनका कहना यदि हमारी समझ में नहीं आती तो वे बड़ी सौम्यता से सरल शैली में समझा देते थे और कहते थे 'कुछ जटिलता हो तो छोड़ दीजीए'। उनके निरंतर अध्ययन तथा भारत भर के पर्यटन से अर्जित ज्ञान तथा अनुभव, दीर्घकाल के अध्यापन अनुभव से परिपक्व बनी भाषण-शैली आदि हमें अध्ययन के शिखर पर पहुँचा देते थे। अपने निश्चय पर वे अटल रहते थे। वे स्नातकोत्तर

अध्ययन में ऐच्छिक विषय के रूप में हमें सूरदास को पढ़ाना चाहते थे। मेरे सहपाठी भी वही पसंद करते थे। किन्तु मैं ने प्रेमचन्द साहित्य का विशेष अध्ययन करना चाहा। आखिर यह निर्णय हुआ कि लेखक विशेष का अध्ययनवाले परचे केलिए हम सूरदास का ही विशेष अध्ययन करें और लताजी हमें पढ़ायें। भारतीय भक्ति आंदोलन तथा दर्शन का अवबोध हमें देने में लताजी सचमुच सफल हईं। वह अध्ययन अनंतर जीवन में मुझे भक्ति साहित्य पर लिखने तथा भाषण देने में सहायक हुआ।

केरल में के.एम.जोर्ज जैसे व्यक्तियों के नेतृत्व में तुलनात्मक साहित्य पर चर्चा अधिक सजीव बनी तो अय्यरजी उसको आवश्यक प्रेरक शक्ति बन सके।

अय्यरजी को प्राचीन साहित्य कृतियाँ अधिक प्रिय रहीं। अध्यापन में भी ऐसे विषय चुनने में ध्यान देते थे। कामायनी जैसे आधुनिक काव्यों पर अच्छा बोलते भी थे। वे मलयालम और हिंदी भाषाओं के पारस्परिक संबंध बनाए रखना चाहते थे। 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' ग्रंथ इसका परिणाम है। स्वातितिरुनाल के हिंदुस्तानी गीतों को संकलित करने का जो कार्य उन्होंने किया, यह संगीत आदि कलाओं पर उनकी रुचि का नतीजा है। 'केरल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास', 'केरल में हिंदी के अग्रदूत' जैसी रचनाएँ केरलीय हिंदी लेखक डॉ.एन.ई विश्वनाथ अय्यर के दृष्टिकोण स्पष्ट करती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के नामकरण में भी विशेषता प्रकट की है, जैसे- 'शहर सो रहा है', 'उठता चाँद डबता सूरज', 'फूल और काँटे' आदि। काव्य कथाओं पर भी वे विशेष रुचि रखते थे।

स्नातकोत्तर अध्ययन के बाद अपने दफ़्तरी कार्यों में मैं लीन हुआ तो लिखने-भाषण देने में वे प्रेरणा देते रहे, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मैंने परीक्षा देने तथा उपाधि पाने के लक्ष्य में हिंदी पढ़ी। किन्तु यह बाद में अपने कार्यालय में अधिकारियों को ज़रूरी अवसरों पर हिंदी में भाषण तैयार कर देने में सहायक हुआ। ऐसे अवसरों पर मैं अय्यरजी की मदद लता था। एक बार बिहार की विधान सभा से आये हुए सदस्यों की खातिरदारी का निमंत्रण पत्र हिंदी में तैयार करना पड़ा । तब 'take a cup of tea' के समांतर हिंदी शब्द मिलने में दिक्कत हुई। तुरंत अय्यरजी को फोन किया। उत्तर मिला 'चाय पर'। ऐसे सैकड़ों अनुभव हैं। अकादमिक कार्यों हेतु भारत में इधर-उधर बीच-बीच में सफर करनेवाले अय्यरजी अपने साहित्यानुभवों के बारे में हमें सुनाते थे।

ललित निबंधकार के रूप में हिंदी साहित्य को अय्यरजी की देन महत्वपूर्ण है। अनुवादक के रूप में भी वे बहुचर्चित हैं। उन्होंन खुद अनुवाद किया है तथा अनुवाद पर पुस्तकें भी लिखी है। उनके 'अनुवाद कला', 'अनुवादः भाषाएँ, समस्याएँ' आदि ग्रंथ विख्यात हैं। कोश-निर्माण के क्षेत्र में भी उनकी देन अमूल्य है । वैज्ञानिक ग्रंथ-लेखन केलिए मलयालम में ज़रूरी पारिभाषिक शब्द-निर्माण में सन् 1960 से लेकर दो दशकों में 'केरल भाषा इंस्टिट्यूट' का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा। उस प्रयास में अय्यरजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रतिभावान अय्यरजी के निधन से भारतीय साहित्य को हुआ क्षय वाणी में प्रकट नहीं कर सकता। 'अखिल भारतीय हिंदी अकादमी' के तत्वावधान में अय्यरजी की हिंदी सेवाओं की चर्चा करने के श्रम ज़रूर प्रशंसनीय है। उस गुरुपूजा केलिए हम सम्मिलित होकर काम करेंगे ।

◆पूर्व प्रकाशन अधिकारी
केरल स्टेट भाषा इंस्टिट्यूट,
तिरुवनन्तपुरम।

'आ जा रे परदेसी' में कोचीन का परिदृश्य

♦ प्रो.उषा.बी.नायर

स्वर्गीय डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर जी केरल के विख्यात हिन्दी साहित्यकार थे। हिन्दी, अंग्रेज़ी, मलयालम तथा तमिल के ज्ञाता थे। लेकिन उनकी रचनाएँ अधिकतर हिन्दी में हैं। उनकी कई आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। लेकिन वे अपने ललित निबंधों के लिए अधिक प्रसिद्ध हुए हैं।

आचार्य विश्वनाथ अय्यर जी को अपना राज्य केरल अत्यधिक प्रिय था। उनके निबंधों में केरल के कई प्रांतों का उल्लेख है, फिर भी तिरुवनन्तपुरम और कोचीन उन्हें विशेष प्रिय थे। यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य एवं संस्कृति पर उन्हें नाज था। उनके लेखों ने भारत के अन्य राज्यों को केरल का परिचय दिया। डॉ. विवेकी राय लिखते हैं, "देश का उत्तर सिर कश्मीर तो परंपरा से स्वर्ग बना है (या था)। परंतु दक्षिणी केरल जो अकूत सुघराई और मिठास के आकर्षणों को छिपाए सामान्यतः उत्तर भारत के लोगों की आँखों से ओझल रहा था वह अय्यर साहब की रचनाओं से अपनी मूलवत्ता को रेखांकित और प्रामाणित करता दृष्टिगोचर हो रहा है।" उनके लेख इतने सुचारु एवं भावुकता से रचित हैं कि इनसे प्रेरणा प्राप्त कई उत्तर भारतीयों को केरल देखने की लालसा हुई। असल में केरल सरकार के पर्यटक विभाग को अय्यर जी का आभार मानना चाहिए कि उनके द्वारा कई उत्तर भारतीयों को केरल आने की प्रेरणा मिली।

आपके प्रथम निबंध संग्रह 'शहर सो रहा है' (1975) में केरल के प्राकृतिक सौंदर्य़ एवं केरलीय जीवन व संस्कृति विशेष रूप से मुखरित हुई है। सन् 1984 में प्रकाशित 'उठता चाँदः डूबता सूरज' केरल से परे देशीय चिंता से ओतप्रोत उनकी यात्राओं का ब्योरा प्रस्तुत करता है। 'फूल और काँटे' (1991) की रचनाएँ यात्रा विवरण मात्र न रहकर वैचारिक स्तर पर उनकी आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं को उभारती हैं। 'सीढ़ी और सांप' (1996) संस्मरण, रेखा चित्र एवं विचारात्मक लेखों का भंडार है। इसमें केरल का चित्र एवं केरलीय जीवन अत्यंत भावुकता एवं दार्शनिकता से दर्शाया गया है। जैसे पहले बताया गया है, उन्हें तिरुवनन्तपुरम एवं कोचीन विशेष प्रिय थे। उनके तीन लेखों में कोचीन का वर्णन मिलता है।

'दूध बहे सोना फले' कोचीन से 40 मील उत्तर पूर्व स्थित रबर एस्टेटों का अति मनोहर चित्र प्रस्तुत करता है। केरवृक्ष से समृद्ध केरल के कल्पतरु को काटकर रबड़ उगाया गया था, जिससे केरलीयों ने काफ़ी धन कमाया था। आज भी ये बागान केरल की आर्थिक स्थिति का मुख्य आधार है। घुमक्कड़ अय्यर जी इन बागानों का सौंदर्य आस्वादन करते-करते वैचारिक संघर्ष पर पहुँच जाते हैं तो उन्हें दुःख होता है कि नगरीकरण एवं औद्योगिकीकरण ने केरल के प्राकृतिक सौंदर्य पर कुठाराघात किया है।

'फूल और काँटे' में कोचीन विश्वविद्यालय स्थापित करते वक्त जिन झंझटों एवं कठिनाइयों का सामना

करना पड़ा था, उनका मार्मिक वर्णन है। फिर भी प्राकृतिक सौंदर्य के उपासक उस बंजर प्रदेश के इने-गिने हरियाली को अनदेखा नहीं कर पाते। चार सूखे बंजर टीले। कहीं कहीं टीलों के नीचे खेत और पेड़ - पौधे। विलक्षण बात यह है कि इन सूखे टीलों पर भी मीठे काजू के फलदार वृक्ष सेवाव्रती बनकर खड़े थे।"

'आ जा रे परदेशी' में कोचीन का एक अलग-सा चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक वहाँ की जनता एवं संस्कृति पर उनका ध्यान अधिक आकर्षित हुआ है। परिवर्तान पर चिंतन करते हुए यह लेख प्रारंभ होता है- "हम सब परिवर्तन के प्रेमी हैं। फिर भी इतिहास को, ऐतिहासिक अतीत को ठुकराया नहीं जा सकता।"

उनका मानना है कि हमारे देश में अनेक ऐतिहासीक स्मारक एवं खंडहर हैं। उत्तर भारत अधिकतर मुगल बादशाहों के वैभव का चित्र प्रस्तुत करता है, मीनारों एवं मकबरों का बाहुल्य है तो दक्षिण भारत मंदिरों की मूर्तिकला एवं वास्तुकला के लिए विख्यात है। फिर भी ऐतिहासिकता की झलक यहाँ मिल ही जाती है। ऐसी झलक कोचीन नगर में भी है। इसका वस्तुनिष्ठ चित्र खींचा गया है।

कोचीन नगर का गौरव कोची झील है जो अत्यंत विशाल है। सागर से मिलती यह झील कोचीन निवासियों का अहंकार है। इसके किनारे कई विदेशियों एवं भारतीयों का आगमन हुआ और काफ़ी लोग पीढ़ियों दर यहीं के निवासी बन गए। इन प्रदेशों का मनोहर दृश्य प्रस्तुत करने के साथ - साथ, यहाँ की जनता की कठिनाइयों, केरलीयों की सद्भावना आदि को भी दर्शाया गया है।

प्राचीन रुढ़ि - रीति - रिवाज़ों का पुराना मुहल्ला, पुराना रहकर भी नवीनता के चिह्नों से अछूता नहीं है। बिजली, नल, कांक्रीट के छप्पर आदि युग परिवर्तन के निशान हैं। फिर भी वहाँ की जनता अपने जीवनक्रम में खास बदलाव नहीं ला पाई।

अय्यर जी मानते हैं कि कोचीन नगर परदेशियों के आगमन से खुश हो जाता है। इसे वे हिन्दी की प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर के इस गीत से जुड़ा देते हैं, "आ जा रे परदेशी। मैं तो कब से खड़ी इस पार।"

कोचीन नगर में इसरायल से पलायन करनेवाले यहूदियों को पनाह दिया था। कोचीन के नरेशों ने उनकी काफ़ी सहायता की। गिरजाघर बनाने की अनुमति दी। वह भी अपने कुल देवता के मंदिर की बगल में केरल की सहिष्णुता का सबूत। इनके अलावा कोचीन में गुजराती सेठों का अपना प्रदेश भी है। एक पूरा मुहल्ला गुजराती व्यापारियों का है। मलयालम खूब बोलनेवाले ये अपने रीति - रिवाज़ों का पालन करनेवाले हैं, इनकी संख्या कई सौ तक है। यह कोचीन की भावात्मक एकता का मनोहर उदाहरण है।

पारसियों की तरह यहूदियों को जब अपना देश छोड़ना पड़ा तो कोचीन ने उनका सहर्ष स्वागत किया, आश्रय दिया 'सिंगोरा सौदा' नामक इस प्रदेश को सागर ने लील लिया। उनकी और एक बस्ती है 'कोच्चंगाटी'।

यहूदियों के बाद पुर्तगाली आए। उन्हें यहूदी पसंद नही थे। उन्होंने यहूदियों को खूब सताया, कई लोगों को मार डाला। लेकिन पुर्तगाली यहाँ टिके नहीं। फिर डच आए, जो यहूदियों के मित्र रहे। अंग्रेज़ो ने भी इन्हें सताया नहीं। इनके धर्मक्षेत्रों में हस्तक्षेप नहीं किया। पिछले शतब्दी में इनके व्यापारी मशहूर थे। विशेषकर 'कोडर' परिवार केरल के प्रमुख व्यवसायी रहे। अब इनकी संख्या कम हो गई है।

यहूदियों का गिरजाघर आज एक पर्यटक स्थल है। चार सौ वर्ष से भी अधिक पुराना यह पर्यटकों को मोहित करनेवाला है। इस भवन का फर्श एवं "दीवार की चमचमाते बेल-बुट्टेदार चीनी मोसाइक इंटें।" सिर्फ यही बचा है, अन्य छोटे-छोटे गिरजाघर नष्ट हो गए।

अय्यर जी की विशेषता है कि वे किसी प्रदेश का चित्र खींचते-खींचते, वहाँ की जनता और संस्कृति पर विचार करते-करते, या तो मानवप्रेमी व सहिष्णुता के प्रतीक बन जाते हैं या दार्शनिक, या फिर इतिहासकार और नहीं तो ये सभी। यह लेख भी अपवाद नहीं है। लेख के अंत तक आते-आते, वे यहूदियों के कोचीन आगमन और उनके ह्रास का विवरण देते हुए, इसरायल की दुस्थिति पर दुखित होते हैं और निम्न लिखित सवाल सामने रखकर लेख समाप्त करते हैं-

"मध्य एशिया की यह विभीषिका क्या समाप्त हो जाएगी? क्या उन्हें सुबुद्धि प्राप्त होगी?" इन प्रश्नों का उत्तर अभी तक मिला नहीं है।

कोचीन नगर के प्रति लेखक की ममता और गौरव इस लेख में स्पष्ट है। सभी तरह के लोगों को स्वीकारने की कोचीन की क्षमता एवं विशालता आज भी प्रसिद्ध है। कोचीन की ऐतिहासिकता को पाठक तक पहुँचाने में आचार्य जी काफ़ी सफ़ल हुए हैं।

विश्वनाथ अय्यर जी आज स्मृतिशेष हैं। फिर भी अपने 'ललित निबंधों' में उनकी झलक मिलती रहेगी और अपने लेखों के ज़रिए हिन्दी प्रेमियों के दिल में अमर रहेंगे।

◆पूर्व प्राचार्या
सरकारी आर्ट्स कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम।

मेरे गुरुवर

◆ डॉ.पी.लता

आदरणीय-प्रिय गुरुवर डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी पीएच.डी के शोध-कार्य में मेरे मार्गदर्शक रहे थे। मेरे शोध का विषय था 'फणीश्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य'। उस समय रेणुजी की रचनाओं पर अधिक आलोचनाएँ निकली नहीं थीं। यही नहीं, अय्यरजी तिरुवनन्तपुरम में रहते थे और मैं तो 'सरकारी कॉलेज, कासरगोड़' में काम करती थी। मैं वहाँ कॉलेज होस्टल में रहती थी। उन दिनों मेरे कॉलेज में मेरे सिवा तिरुवनन्तपुरम से किसी भी विभाग में कोई भी प्राध्यापक काम नहीं करता था। अकेले रात को रेल गाड़ी से तिरुवनन्तपुरम तक की लंबी यात्रा से बचे रहने केलिए मैं कभी-कभार ही अपने घर जाती थी। शनिवार और इतवार के दिनों में थोड़ा भी समय गँवाये बिना होस्टल के शांत वातावरण में मेरा मन शोध-कार्य में लगा रहा। यह शीघ्र ही पीएच.डी उपाधि प्राप्त करके डॉक्टर बनने केलिए नहीं था, वरन् अपनी सुस्ती के कारण मैं शोध-कार्य टालती रहूँ तो मेरे कर्मठ गुरुवर क्या सोचें इस विचार से था। यों गुरुवर के प्रति स्नेहिल तथा सम्मान्य भाव से उद्भूत मनोयोग के साथ शोध-कार्य करते रहने पर अविलंब ही मैं अपना काम पूरा कर सकी।

मुझे अपने गुरुवर के साथ सायाह्न कॉलेज में स्नातकोत्तर कक्षा में पढ़ाने का सुयोग प्राप्त हुआ था। अय्यर जी के साथ उनके सहायक के रूप में स्नातकोत्तर

(शेष पृ.सं. 46 में)

ज्ञान-गठरी के अविश्रांत साधक

♦ डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा

केरल के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर का भौतिक शरीर काल-यवनिका के पीछे छिप गया, लेकिन उनकी आत्मा सदा हिन्दी के क्षेत्र में जीती रहेगी। बहुत कम ऐसे व्यक्तित्व होते हैं, जिन्हें चीज़ों को परिस्थिति के अनुकूल दूरदर्शिता के साथ देखने, समझने एवं कार्यान्वित करने की शक्ति प्राप्त होती है। अय्यरजी ऐसे ही विरल व्यक्ति थे, जिनमें जटिल से जटिल मामलों को सरलता, स्पष्टता और व्यावहारिता के साथ समझाने एवं लागू करने की अद्‌भुत क्षमता थी। संभवतः अपने इन्हीं गुणों के कारण वे अनेक पुरस्कारों से अलंकृत हुए थे।

डॉ.विश्वनाथ अय्यर जी तमिल मूल के व्यक्ति हैं। लेकिन इनके पूर्वज न जाने कब आकर केरल के पालघाट शहर में बस गए। वही 20 जुलाई 1920 को इनका जन्म हुआ।इनकी मातृभाषा मलयाळम हो गयी। लेकिन इनका सारा जीवन हिन्दी की सेवा में बीता। आज वे दक्षिण के अग्रणी हिन्दी लेखकों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। इनकी रचनाओं को पढ़ते हुए ऐसा लगता ही नहीं कि इनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं हैं।

स्वाधीनता-संग्राम के समय कांग्रेज़ी नेता विशेष रूप से पालघाट आते थे। स्वाधीनता-संग्राम में इस शहर का योगदान विशेष रूप से प्रशंसनीय रहा है। इसलिए हिन्दी प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से भी पालघाट बहुत सक्रिय रहा। दूर-दूर से छात्र यहाँ के नेटिव-स्कूल में आकर पढ़ते थे। लेकिन इतना होने पर भी स्वयं अय्यरजी को हिन्दी के कार्य से, प्रत्यक्ष रूप में जुड़ने का अवसर कम ही मिला। वहाँ रहते हुए उन्होंने हिन्दी सीखी। लेकिन विशेष कुछ नहीं कर पाया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी एवं संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। अंत में साहित्य के डॉक्टर (पी एच.डी) बन गए।तब हिंदी की ओर उनकी रुचि जाग्रत हुई। इसके बाद इन्होंने केरल की अनेक शिक्षा-संस्थाओं में अध्यापन-कार्य किया। केरल विश्वविद्यालय में प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष रहे। अंत में कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पहले प्रोफ़सर, फिर अध्यक्ष हो गए।वहीं रहते हुए इन्होंने विद्यार्थियों के शोधकार्य का निदेशन किया। परीक्षक भी रहे। अय्यरजी बड़े घुमक्कड़ थे।प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन से लेकर विदेशों में होनेवाले अधिवेशनों में इनको सादर सम्मानित भी किया है।

जीवन के प्रति अय्यरजी की स्वतंत्र दृष्टि थी। उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है उनका अदम्य स्वाभिमान। 'जो न झुकता था, न थकता था, न रुकता था।'[1] जीवन में सारी कुंठाओं के बावजूद अय्यरजी ने स्वाभिमान कभी नहीं छोड़ा। देशप्रेम उनकी नस-नस में भरा हुआ है। उनका आदर्श है- सादा जीवन और उच्च विचार। पूरी तरह मानवीयता की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। परिश्रमशीलता,

संवेदनशीलता, आदर्शवादिता, परोपकार आदि उनके व्यक्तित्व की उल्लेखनीय विशेषताएँ रही थीं।

डॉ.अय्यरजी का रचना-संसार व्यापक एवं बहुआयामी है। परंपरा के प्रति प्रणिपात दृष्टि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की रेखांकित विशेषता है। उनके सम्बंध में डॉ.विवेक राय का कथन है कि "निबंधकार के रूप में लेखक का राष्ट्रीय व्यक्तित्व हर रचना में अपनी छाप छोड़ता है। यह उस सृजन धर्मी राष्ट्रीय व्यक्तित्व के अनुरंजक छाप की गुणवत्ता होती है कि मोटे रूप में शुष्क समझा जानेवाला यात्रा-वर्णन सरल ललित निबंध की कलाभंगिमा में प्रस्तुत मिलता है।"[2] उनका हिन्दी लेखन-कार्य सन् 1947 में शुरू हुआ। उनकी प्रथम पुस्तक 'होनहार बालक और अन्य कुछ कहानियाँ' इसी वर्ष में प्रकाशित हो गयीं। बीस से अधिक पुस्तकें अब तक प्रकाशित हैं। इनमें सभी विधाओं की रचनाएँ शामिल हैं। अनुवाद के क्षेत्र में उनका योगदान सराहनीय है। तुलनात्मक साहित्य में बिडला फांउडेशन का फैलोशिप, अनुवाद के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि प्राप्त हैं। लंदन में संपन्न विश्वहिन्दी सम्मेलन में तो इन्हें विशेष रूप में सम्मानित किया गया। कई हिन्दी संस्थाओं से विशेषकर 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' से उनका अटूट नाता है।

आजकल एक कामचलाऊ और औपचारिक ढंग की नकली ज़िन्दगी समाज में पनप रही है, यह नकलीपन और इसके पीछे मुंह बिराता खोखलापन किसी भी सहृदय व्यक्ति में जो दर्द पैदा करता है, वही अय्यरजी की रचनाओं का प्रेरणास्रोत है। ताज़गी उनकी रचनाओं का विशेष गुण है। कोई भी रचना घिसे-पिटे विषय पर नहीं है। केवल विषय ही मौलिक नहीं, प्रत्युत दृष्टिकोण भी मौलिक है। इन रचनाआं में लेखक की बोलती हुई पीड़ा का साक्षात्कार होता है, जो कहीं हमारे विचारों पर आघात करती है, कहीं हमारे हृदय पर चोट करती है और कहीं स्थिति के व्यंग्य को स्पष्टकर हम में व्यथा-भरी मुस्कान उत्पन्न कर देती है। उस पीड़ा में जो दर्द है, वह सात्विक है।

भाषा पर अय्यरजी का व्यापक अधिकार है। उनका शब्द भंडार अत्यंत समृद्ध है। परंतु वे सरल एवं सर्वमान्य शब्दों का प्रयोग करते हैं। अय्यरजी कई भाषाओं के ज्ञाता हैं।अलंकारों, लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। व्यंग्य, आवेग तरंग, विचारात्मक-व्याख्यात्मक शैलियाँ आदि अय्यरजी के विचार, अनुभव, विषय, कल्पना, वातावरण आदि को व्यक्त करने में सफल हुई हैं।

अंत में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह कहना असमीचीन न समझती हूँ कि अय्यरजी ने हिन्दी साहित्य की अपनी जो नींव रखी, वह कभी हिलेगी नहीं। अय्यरजी जैसे कर्मयोगी की मृत्यु न तो विरामचिह्न है और न ही अंतिम पड़ाव। वे स्थूल रूप में न सही, सूक्ष्म रूप में अवश्य हमारे बीच जीवित रहेंगे और हिन्दी सेवियों को प्रेरणा देते रहेंगे-

'अजो नित्यः शाश्वततोयं पुराणो।
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।'

1.शील ग्रन्थावली - उपासना तिवारी, पृ.103
2.ललित निबंध- डॉ.एल.कुमारी, पृ.20

◆ पूर्व अध्यक्षा,
हिन्दी विभाग,
एस.एन कॉलेज, कोल्लम।

आचार्य डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर-स्मृतिचित्र

♦ **डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन**

डॉ.विश्वनाथ अय्यरजी से मेरा परिचय उन्नीस सौ पच्चीस ई. में हुआ था। शोध छात्र के रूप में उस समय से उनके आचार्यत्व तथा पांडित्य से अवगत होने का सौभाग्य मुझे मिला था। 'अज्ञेय जी के उपन्यासों में अभिव्यक्त समसामयिकता' विषय पर उनके मार्गदर्शन में मेरा शोधकार्य संपन्न हुआ था। स्वस्थ दृष्टि-संपन्न शोध निदेशक रहे हैं डॉ.अय्यरजी। उन दिनों वे कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हो गए थे। गंभीर लगनेवाले होने पर भी उनके अन्तर्मन की सरसता व विनोदप्रियता से थोड़ा परिचय मुझे प्राप्त हुआ। सुलझे हुए विचारों के वे हिमायती रहे। प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान होने पर भी वे आधुनिक साहित्य के अध्ययन में खास रुचि रखते थे। 'अज्ञेय' से संपर्क एवं साक्षात्कार का सौभाग्य अय्यरजी की प्रेरणा व प्रोत्साहन से ही मुझे प्राप्त हुआ था। शोध सामग्री संचयन हेतु सन् 1986 को अज्ञेय से मुलाकात की बात हुई थी। जे.एन.यू, दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्र साहित्य अकादमी, जहाँ-जहाँ मैं गया था; वहाँ के हिन्दी प्रेमी व सेवी डॉ.अय्यरजी की बड़ी तारीफ़ करते थे। उनके छात्र रहने के वास्ते मुझे अतिशय सहायता मिली।

डॉ.अय्यरजी के सही सोच के कारण तिरुवनन्तपुरम शहर में 'भाषारंगम' की स्थापना हुई। साहित्यिक आदान-प्रदान ही इस मंच की प्रमुख कार्य-योजना रही। राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक अनुवाद संबन्धी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। विश्वनाथ अय्यरजी 'भाषारंगम' के अध्यक्ष रहे थे। कार्यदर्शी के रूप में उनके साथ दो-एक साल कार्यरत रहने का जो अनुभव मुझे प्राप्त हुआ वह मेरेलिए प्रोत्साहन का रहा। 'भारतीय खाद्य निगम' के आँचलिक कार्यालय, मद्रास में मेरी नियुक्ति हुई, ताकि 'भाषारंगम' से जुड़ा कार्यभार बन्द हुआ था। यह विचार मंच सन् 1987 तक प्रतिमाह साहित्यिक सजीवता का बना रहा।

आन्ध्र-प्रदेश हिन्दी अकादमी की ओर से हैदराबाद में आयोजित 'दक्षिण भारत की भाषाओं से हिन्दी में अनूदित साहित्य' विषयक राष्ट्रीय समारोह में मलयाळम के अनूदित काव्य साहित्य पर आलेख प्रस्तुति का मौका मुझे अय्यरजी की उदारता से मिला। डॉ.विजयराघव रेड्डी, डॉ.बालशौरी रेड्डी, डॉ.शौरिराजन, प्रो.नागप्पा आदि वरिष्ठ हिन्दी सेवियों से परिचय उसी समारोह में हुआ।

कहा जाता है कि बरगद अपने नीचे छोटे पौधों को फलने-फूलने का अवसर ही नहीं देता। डॉ.अय्यरजी का व्यक्तित्व इसका अपवाद रहा। इसी संदर्भ में डॉ.पी.वी.विजयनजी के शब्दों का मैं उल्लेख करूँ - डॉ.विश्वनाथ अय्यर आकाशधर्मी आचार्य हैं, शिलाधर्मी नहीं। शिला स्वयं बढ़ती है,

औरों को रोकती है, बढ़ने नहीं देती। उदार आकाश अपनी छाया में सब को बढ़ने देता है। अय्यरजी ऐसे ही आकाशधर्मी आचार्य हैं जिन्होंने किसी के भी प्रगति-पथ में बाधा नहीं डाली। अपने निकट संपर्क में रहनेवालों के लिए वे लेखन एवं अध्ययन के कार्य में हमेशा प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। अय्यरजी के परिवारवालों से मुझे जो प्यार व सहयोग (खासकर उनकी धर्मपत्नी की ओर से) प्राप्त हुआ वह कभी भूलने लायक नहीं।

डॉ.अय्यर ने अपना जीवन अध्ययन और अध्यवसाय के बल पर ही निर्मित किया। अय्यरजी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता समन्वयात्मकता है। वे अध्यापक हैं, साथ-साथ विद्यार्थी भी हैं। शोध निर्देशक हैं, शोधार्थी भी हैं। अतीत के प्रति मोह है। समसमायिक चेतना भी है। उनके व्यक्तित्व और चिन्तन में लक्षित समन्वयात्मकता उनके कृतित्व में भी उपलब्ध है।

अय्यरजी की समन्वयात्मक प्रवृत्तियों का परिचय उनके साहित्यानुशीलन में वर्तमान है। जिस मनोयोग से हिन्दी के मध्यकालीन कवि के काव्य-मर्म का उद्‌घाटन करते थे, उसी मनोयोग से प्रसाद, पंत, निराला जैसे आधुनिक कवियों की कृतियों का मूल्यांकन करते थे। अज्ञेय, मुक्तिबोध, धूमिल जैसे कवियों की कविताएँ भी बड़ी उत्सुकता से पढ़ते थे और अपने को समकालीन काव्य संवेदना से भी जोड़ते रहते थे। समकालीन कवियों की कविता में भी उनकी बड़ी पकड़ रही थी। साहित्य की अन्य विधाओं का भी अध्ययन-मूल्यांकन करते हुए अय्यरजी अपने साहित्य बोध को सदा सजग करते रहते थे। हर बात में उनके विचार पक्के हैं। इसलिए उनके साथ विचार-वैषम्य का होना भी स्वाभाविक है।

डॉ.अय्यर संवेदनशील व सहृदय व्यक्ति थे। उनकी 'विनोदप्रियता' वक्तृत्व कला में प्रसंगानुसार प्रकट होती थी। भाषण विद्वतापूर्ण होने के साथ ही हास्य-व्यंग्य पूर्ण हुआ करता था जिसमें उनका मौलिक व्यक्तित्व झलकता था।

सेवानिवृत्त होने पर डॉ.अय्यरजी अधिकतर समय तिरुवनन्तपुरम यूनिवर्सिटी कॉलेज के निकट के ट्यूटेर्स लेइन में अपने घर 'अनुषम' में रहते थे। प्रिय पत्नी के आकस्मिक वियोग के बाद कुछ साल तंपानूर रेलवे स्टेशन के नज़दीक के ब्राह्मिन स्ट्रीट में बड़ी बेटी के घर पर रहने लगे थे।

केरल के उत्तर जिले की जगहों के कॉलेजों से स्थानान्तरण पाकर जब मैं तिरुवनन्तपुरम आया तब अक्सर उनके निवास स्थान पर जाया करता था। पठन-पाठन पर प्रोफेसर साहब से विचार-विनिमय किया करता था। साहित्यिक रुचि को बनाये रखने की प्रबल प्रेरणा आप देते थे। 'संग्रथन' पत्रिका के साथ जुड़े रहने का समर्थन करते थे। 'संग्रथन' के संस्थापक प्रो.पी.जी.वासुदेव और उनके सुपुत्र डॉ.विश्वम के वे परम हितैषी रहे।

कार्यालयीन दौड़-धूप में कभी कभी अय्यरजी के यहाँ आना-जाना थोड़ा मुश्किल भी रहा। फिर जब कभी मिलते थे उन्होंने मेरी अपनी उदासीनता पर संकेत करता था। कभी-कभी मुझे टेलिफोण पर बुलाते थे। लेख वगैरह की फेयर कॉपी लिखने और डाकघर में प्रेषित करने, बैंक में लेन-देन संबन्धी कार्यों आदि में सदा मदद माँगी थी।

एक और बडी बात भी होती थी कि जो भी हिन्दी भाषी लेखक, वरिष्ठ प्राध्यापक, आचार्य आदि यूनिवर्सिटी कॉलेज के हिन्दी विभाग में भाषण-कला में आते थे उन्हें अय्यरजी के घर पर ले जाना भी मेरा कार्य रहा था। अय्यरजी के शिष्य बता देने में मुझे विशेष गौरव प्राप्त था। गुरुवर से जुड़ी यादों को समेटना यहाँ स्थानाभाव के कारण संगत न रहेगा।

भाषाई-सेवा उनको बड़ी तपस्या-सी लगी थी। ललित निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्त, डायरी, संस्मरण, पत्रकारिता, अनुवाद जैसी विधाओं में उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया था। 'संग्रथन' मासिक पत्रिका को उनका मूल्यवान सहयोग हमेशा मिला था। विशेषांक में दिये उनका सन्देश उद्धृत करना संगत होगा- "हमारी पीढ़ी का युग हिन्दी समझने और प्रचार करने का युग था। वर्तमान पीढ़ी बहुत आगे बढ़ी है। वह हिन्दी को अपनी सृजन-प्रतिभा से समृद्ध कर रही है। यह देख मन बहुत खुश है। सप्रेम अनुरोध है कि नये अनछुए आयामों की तरफ़ बढ़ें। केरल में अखिल भारतीय स्तर के हिन्दी कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार आदि अच्छी संख्या में हों। इस साधना हेतु 'संग्रथन' महत्वपूर्ण भूमिका ग्रहण करे।"

हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए की गयी उनकी सुदीर्घ साधना चिरस्मरणीय रहेगी। स्वर्गीय गुरुवर डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर को शत-शत प्रणाम।

♦ सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं
भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष,
यूनिवर्सिटी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम।

मेरे गुरुवर

(पृ.सं.41 के आगे)

कक्षा में पढ़ाती हूँ, यह चिंता मन में रहने के कारण भली भाँति पाठ समझकर ही कक्षा में पढ़ाती थी। यह अनुभव मेरी आगामी अध्ययनवृत्ति में गुणकर रहा।

अपनी 'केरल हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास' पुस्तक का लोकार्पण कर्म माताजी की भी उपस्थिति में हो, मेरी यह इच्छा जानकर अय्यरजी मेरे घर में पधारे तथा उनके कर कमलों से प्रस्तुत पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। मेरे गुरुवर के, मेरे पिताजी के तथा मेरे पिताजी के आत्ममित्र रहे स्व. एम.के.वेलायुधन नायरजी के आशीर्वाद से हो, थोड़ी मात्रा में ही सही मेरा लेखन-कार्य सतत चलता रहता है। उनकी साहित्यिक रचनाओं तथा अन्य दस्तावेज़ों की स्वच्छ प्रतियाँ लिख देने का सौभाग्य कई बार मुझे प्राप्त हुआ था।

अय्यर जी मेरी शादी के पिछले दिन सपत्नीक घर में आये थे तथा शादी के दिन हॉल में भी। पति-पत्नी दोनों ने मुझे आशिष दी। उनकी दुआ ज़रूर मुझे लगी है। उनकी धर्मपत्नी स्व.अलमेलु अम्माल (मेरी अलमलु आन्टी) बड़ी मिलनसार थीं। जब भी मैं अय्यरजी से मिलने उनके घर जाती थी मुझे आंटी अंदर बुलाती थीं तथा आधा घंटा बोलने के बाद ही अनमना वापस आने देती थीं। वे अपने मन की बातें मुझसे बाँटती थीं तथा मेरा हालचाल भी पूछा करती थीं।

अब मेरे गुरुवर तथा आंटी जी दोनों ज़िन्दा नहीं हैं। स्वर्गीय गुरुवर तथा अलमेलु आंटी जी को शत कोटि प्रणाम।

♦ मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
सरकारी महिला महाविद्यालय
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।)

डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर : केरल का अग्रगण्य हिंदी लेखक

♦ **अधिवक्ता मधु. बी.**

डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी से मेरा दीर्घ परिचय नहीं है, फिर भी जो अल्पकालीन परिचय है उससे मैं उनपर बहुत ही प्रभावित हूँ। मैं ने कभी नहीं सोचा था कि 'केरल हिंदी प्रचार सभा' का मंत्री बनूँगा और मंत्री की हैसियत से उन पर चन्द शब्द लिखने का अवसर मिलेगा। मेरे छात्र जीवन में अनेक बार विश्वनाथ अय्यर जी को 'केरल हिंदी प्रचार सभा' में देखने के अवसर को अत्यन्त अमूल्य समझता हूँ। जब मैं एम.ए. की परीक्षा के लिए तैयार हो रहा था तब कुछ संदेह लेकर उनके घर में पहुँचा था। उसके बाद जब कभी भी उनसे मिलने का अवसर होता था तब वे मेरा कुशल-क्षेम पूछा करते थे।

सन् 2011 में 'केरल हिंदी प्रचार सभा' में आयोजित एक संगोष्ठी में एक आलेख प्रस्तुत करने के सिलसिले में उनकी सहायता पाने केलिए उनसे मिला था। विषय था 'हिंदी भाषा और दक्षिण भारतीय साहित्य'। उस समय से उनके साथ मेरा संबंध सुदृढ़ हो गया। अवश्य ही मेरे व्यक्तित्व के निर्माण में उनसे मेरा संपर्क सहायक रहा है। 07-03-2014 को अय्यरजी दिवंगत हुए तो मुझे गहरा आघात लगा। मौलिक साहित्य की रचना के साथ अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका योगदान महनीय है। उनकी स्मृति के फूलों के रूप में उनके प्रिय विषय ललित निबंध और अनुवाद पर अपने कुछ शब्द मैं उनके अदृश्य चरणों पर श्रद्धापूर्वक समर्पित करता हूँ।

हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में विशेषतः 'ललित निबंध' के क्षेत्र में एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी एक समादृत व्यक्तित्व है। लोकप्रियता की दृष्टि से उनके निबंध प्रसिद्धि-प्राप्त हैं। हिंदी के आधुनिक साहित्य में ललित निबंधों की एक महान परंपरा है और इस क्षेत्र में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, रामकृष्ण बेनीपुरी और विद्यानिवास मिश्र प्रमुख हैं। इस परंपरा की आखिरी कड़ी के रूप में अय्यर जी की भूमिका है।

उनके प्रकाशित निबंध संग्रहों में 'शहर सो रहा है' (1975), 'उठता चाँद डूबता सूरज'(1984), 'फूल और काँटे'(1992), 'सीढ़ी और साँप'(1996),'घने केर तरु तले'(2001) आदि सहृदयों द्वारा सराहे गये हैं। केरल की सांस्कृतिक गरिमा को पूरे भारत में फैलाने का महान कार्य भी उन्होंने किया है। इस दिशा में उनकी महत्वपूर्ण रचनायें हैं- 'केरल की लोककथायें', 'केरल की जन कथायें', 'केरल की वीरकथायें' आदि।

अनुवाद के क्षेत्र में भी अय्यर जी ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जहाँ एक ओर उन्होंने मलयालम की प्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद हिंदी में किया है वहाँ दूसरी ओर अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष पर मौलिक चिन्तन भी किया है। उनके द्वारा रचित 'अनुवाद कला' शीर्षक ग्रंथ भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर प्राठ्य पुस्तक के रूप में चुना गया है।

सचमुच उनका व्यक्तित्व राष्ट्रभारती के लिए समर्पित व्यक्तित्व है।

♦ मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।

निबंधकार डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यरजी

♦ डॉ.रंजीत रविशैलम

लिखित रचना व्यक्ति को पूर्णता देती है। अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध लेखक बेकन ने लिखा है - 'वाचन' प्रस्तुत मनुष्य को बनाता है और लेखन ठीक अथवा उचित मनुष्य को बनाता है। लिखित रचना के माध्यम से रचनाकार अमर होता है। रचनाक्रम से विचार क्रमबद्ध होते हैं, कल्पना उड़ती है और तर्कशक्ति विकास पाती है। प्रत्येक रचना देश की निधि होती है, इसकी संस्कृति और सभ्यता की रक्षिका होती है। हिन्दी साहित्येतिहास में हिन्दी भाषी साहित्य सेवियों के साथ हिन्दीतर भाषी प्रान्त के लेखकों व आचार्यों ने भी भरपूर साहित्य भारतीय वाङ्मय को प्रदान किया है।

उन सिद्धहस्त आचार्यों में प्रो. (डॉ) एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी का स्थान अव्वल है। एक साथ साहित्यिक एवं भाषाविद् होना आम बात नहीं है। लेकिन डॉ.अय्यर जी ने दोनों रूपों को भली भाँति निभाया। 'ललित साहित्य' के वे प्रणेता थे। ललित साहित्य में साहित्य की वे सब कोटियाँ आयेंगी, जिनमें बोध पक्ष उतना प्रधान नहीं, जितना भावपक्ष। अर्थात् जिनमें बुद्धि की अपेक्षा हृदय को स्पर्श करने की क्षमता अधिक हो, वही ललित साहित्य है। इसमें शैलीगत लालित्य का आग्रह अधिक है। 'ललित साहित्य' डॉ.अय्यर जी का प्रिय विषय रहा। उन्होंने अधिक से अधिक निबंधों का सृजन कर केवल केरल को ही नहीं, समूचे भारतवर्ष को गौरवान्वित किया। उनके ललित निबंधों की संख्या सौ से अधिक है।

उनके निबंधों में उच्च कोटि की कलात्मकता, सौन्दर्य-सृष्टि, कल्पना, भावना आदि विशिष्ट साहित्य गुणों का एकीकरण हम देख सकते हैं। इस तरह की शैली विवेचना नीति और मानस शास्त्रों के आधार पर की गई है। अय्यर जी की दृष्टि पैनी होने के सबब समाज में घटित आशंकाओं पर उनकी जिज्ञासा जागृत होना सहज है। लेकिन लोगों के शंका-निवारणार्थ अधिक से अधिक निबंध उन्होंने तैयार किये।

डॉ. अय्यरजी अपने निबंधों के विषय राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक आदि विस्तृत परिप्रेक्ष्य में ढूँढ़ते हैं। आम तौर पर उनके निबंध का स्वरूप यात्रावृत्तांत-सा लगता है। चींटी से लेकर हाथी तक उनके निबंधों के लिए 'विषय' बनते थे। उनके निबंध-लेखन के मुख्यतः तीन सोपान हैं; (अ) पहले तो वे अपने मन में किसी विषय का चयन करते हैं, फिर उसकी समाज - सापेक्षता पर विचार करते हैं तथा लोकप्रियता एवं छात्रों केलिए उपादेयता आदि देखते हैं, (आ) विषय - चयन के बाद वे विचार के संयोजन के लिए अध्ययन करते हैं - यह अध्ययन पुस्तकों का हो सकता है, समाज और राजनीति का भी। मौलिक अध्ययन करके भी वे विषय के लिए नवीन ज्ञान का अर्जन करते हैं और (इ) अध्ययन से प्राप्त ज्ञान पर फिर निबन्धकार श्री अय्यर जी चिन्तन और मनन करते हैं और उसे क्रमबद्धता देते हैं। उनके विचारों की गंभीरता और हल्केपन के कारण ही उनके निबंध गरिमामय बन जाते हैं। वे विषय की अनुकूल शैली अपनाते हुए प्रवाहमयी भाषा में निबंध लिखते हैं।

डॉ.अय्यरजी के कई ललित निबंध प्रसिद्ध हुए, यथा-शहर सो रहा है, कल्पतरु की छाया में, सावन आया रे, कनेर फिर से खिले, तमसो मा ज्योतिर्गमय, राग दरबारी, नव वर्ष शुभ हो, हाहाकार और हँसी, प्रथम पृष्ठ और अन्तिम भी, उठता चाँद डूबता सूरज, झपकियों के बीच, सागर के नीलकंठ, गोश्री नगर से श्रीनगर, होली और ओणम, बहने दो, आधी-अधूरी स्मृतियाँ, गुलमर्ग का शेरखाँ आदि। उनके निबंधों के शीर्षकों में भी अजीबोगरीब आनन्द निहित है। उनका विषय-प्रवेश अत्यंत प्रभावी है। जैसे- 'उठता चाँद डूबता सूरज' निबंध में वे लिखते हैं - "केरल के विश्वविद्यालयों में कोच्चिन विश्वविद्यालय की एक खास बात पर नाज़ है कि उसका प्रशासकीय कार्यालय कोच्चिन के स्वर्गीय शासकों के राजमहल में बसा है। महल में रहने की किस्मत जिसे नहीं बदा हो यह कम -से-कम कर्मचारी के रूप में इस महल में रहने का गौरव अनुभव कर सकता है। इस महल को मलयालम में 'कनकक्कुन्नु' (सोने का टीला महल) कहते हैं तो अंग्रेज़ी के विद्वान शुद्ध भौगोलिक नाम 'हिल पैलेस' से इसे अभिहित करते हैं।"[1] और एक उदाहरण दिखिए - "भारत की भावात्मक एकता के दो भौगोलिक प्रतीक हैं - कन्याकुमारी और हिमाचल। कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मायावी मन्दहास से हमें चकित करती हैं। काश! - चित्रकारिता मेरे वश की बात होती है।"[2] उन्होंने अपने निबंधों का विषय-प्रवेश पद्यांशों के साथ भी किया है; यथा -

"निशि की दो घड़ियाँ बीतीं, बदन हुआ बेहाल
जगकर जो आँखें खोलीं, मच्छर दिये दिखाय।
मच्छर - बन्दा में हुआ निशा-मध्य-संवाद,
गद्यरूप लिख डारिहों मित्र - बन्धु - मुद हेत।"[3]

अपनी बातें प्रस्तुत करने केलिए उन्होंने निबंध का सहारा लिया। साहित्य में चलती गतिनिधियों पर उनका सोच है - "प्रगति खंड़न, प्रतिक्रिया और विकास का यह क्रम हर देश में, हर क्षेत्र में, खासकर साहित्य के क्षेत्र में चलता रहता है। समुद्र में लहरों के उत्थान-पतन या दिन-रात्रि के आवर्तन-प्रत्यावर्तन के समान यह बात भी शाश्वत है। इस शब्द का यहाँ अर्थ है - सतत प्रवहमान। इसलिए विकास को देखकर उसे एकदम रोकना संभाव नहीं लगता। हिन्दी और हिन्दी साहित्य के विकास को देखकर ऐसी ही प्रगतिशील धाराओं को रोकने का प्रयास असफल ही हो सकता है।"[4] और एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है - "ओणम अचानक आकर एकाएक बिदा होनेवाला मेहमान थोड़े ही है। वह आता है तो पूरे दस दिन यहाँ बिताने के बाद ही बिदा लेता है।"[5]

उनके निबंधों में गहन गूढ़ता का नितांत अभाव है। इसलिए पाठकों तक निबंधकार अय्यरजी की बातें सीधे-सीधे पहुँच जाती हैं।

उन्होंने अपने निबंधों में अनेक शैलियों, यथा - परिचयात्मक शैली, गवेषणात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली, भावात्मक शैली और व्यंग्य - प्रधान शैली का प्रयोग किया है। वैसे उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से 'स्तरीयता' की प्रतिष्ठा की है। उनके सभी निबंध साहित्य के छात्रों को मद्धे नज़र रखते हुए लिखे गये हैं। प्रत्येक शिक्षक का धर्म है कि वह छात्रों में रचना के द्वारा कल्पना, विवेक तथा निरीक्षण शक्ति को विकसित करे। उनमें तार्किक शक्ति उत्पन्न कराना शिक्षक का दायित्व है। डॉ.अय्यरजी की रचनाएँ इसी दृष्टि में सफल हैं। उनका भाषा-प्रयोग उमदा रहा है। उदाहरणस्वरूप हम देख सकते हैं - "एक मारीशियन रुपए का मूल्य भारतीय 1 रुपया 38 पैसे हैं। यह बैंक का भारतीय दर है। मारीशस में भारतीय मुद्राएँ ले जाना

जुर्म है।" "शेरखाँ इसी पेशे में बड़ा हुआ है। उसकी शादी हुई, बच्चे हुए और पोते नाती भी हैं। आज उसका नाम उपहासात्मक हो गया है।" अय्यर जी की भाषा अत्यंत सुन्दर है, व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध है, अर्थ की दृष्टि से सरल एवं सुबोध है। विषयानुकूल प्रभावोत्पादन में वे प्रवीण हैं।

उनके निबंधों में 'एकत्व भाव' निहित है: "असम की राजनैतिक समस्याओं पर मतभेद हो सकता है। मगर असम की चाय की मिठास पर मतभेद नहीं हो सकता। असम राज्य का स्मरण करने पर अयाचित रूप से असमिया चाय याद आती है। क्या पूरब क्या दक्षिण देश भर की चाय भारतवासियों की जीभ और जी को तरावट पहुँचाती है - दक्षिण, उत्तर, पूरब, पश्चिम मेल कराती मीठी चाय।" वैसी एकात्मकता उनके निबंधों की सविशेष विशेषता है। सुदूर दक्षिण में स्थित केरल से लेकर कश्मीर तक के विभिन्न स्थानों में की गई यात्राओं का विवरण प्रदानकर उत्तर-दक्षिण के सेतु-स्वरूप डॉ.अय्यर जी की छवि हमारे सामने है। अपने निबंधों के बारे में अय्यरजी ने 'शहर सो रहा है' निबंध संग्रह की भूमिका में यों लिखा है - "ललित निबंधों का यह संग्रह भेंट करते हुए संकोच व उल्लास दोनों अनुभव हो रहे हैं। संकोच इस शंका से कि उच्च कोटि के प्रशस्त ललित निबंधों के सामने इन मामूली शब्द-संग्रहों की क्या हस्ती है। उल्लास दो कारणों से हो रहा है। एक तो केरल के मौलिक हिन्दी सृजन के क्षेत्र में और किसी ने इस विधा का प्रयास कम किया है। दूसरे यह सन्तोष हो रहा है कि समय पर उमड़े मनसिक भावों और कल्पनाओं को मुद्रित रूप दे सका।"

निबंध साहित्य के साथ उनकी अन्य रचनाएँ भी प्रसिद्ध हैं, यथा : आधुनिक हिन्दी काव्य तथा मलयालम काव्य, मलयालम - हिन्दी व्यावहारिक कोश, राष्ट्रभारती को केरल का योगदान, विज्ञान योगिनी, आधी घड़ी (अनुवाद) आदि। लेकिन निबंध साहित्य-सृजन से उनको हमारे बीच एक विशेष ख्याति प्राप्त है। सही मायने में अय्यर जी की रचनाएँ विशेष रुचिकर हैं। विश्व हिन्दी सम्मान सहित अन्य अनेक पुरस्कारों से सम्मानित अय्यर जी की निबंध कला के बारे में डॉ. बलगोविन्द मिश्र ने सही लिखा है - "उन्होंने ललित निबंध विविध विषयों पर लिखे हैं जिनमें यात्रा - विवरण तो है ही, हिन्दी के उद्भट आलोचका के संस्मरण भी हैं। प्रो.अय्यर के निबंध लेखन की शैली में जैसा प्रवाह है वैसा सामान्यतया नहीं दीखता।"

संदर्भ

1.उठता चाँद डूबता सूरज - पृ.सं.1 (प्रकाशक - स्वाति प्रकाशिन, तिरुवनन्तपुरम; वर्ष 1984)।

2.'गोश्री से श्रीनगर'- उठता चाँद डूबता सूरज, पृ.सं. 24।

3.मानव - मच्छर संवाद, उठता चाँद डूबता सूरज, पृ.सं. 36।

4. बहने दो - उठता चाँद डूबता सूरज, पृ.सं.100।

5. सावन आया रे - शहर सो रहा है, पृ.सं.27 (प्रकाशक-स्वाति प्रकाशिन, तिरुवनन्तपुरम; वर्ष 1975)।

♦ (पूर्व अधिकारी,
वायुसेना विभाग, ग्वालियर)
रविशैलम, कट्टक्कलक्कुषि़ पी.ओ
बालरामपुरम, तिरुवनन्तपुरम -695 501।

मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ.पी.लता, आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम -14 द्वारा अबी प्रकाशन एन्ड प्री-प्रेस, करुमम्, तिरुवनन्तपुरम -2 में मुद्रित तथा डॉ.पी.लता द्वारा संपादित
Printed & Published by Dr.P.Letha, Arathi, T.C. 14/1592, Forest Office Lane, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram -14,
Printed at Abi Design & Pre-Press, Karumom, Thiruvananthapuram -2 & Edited by Dr. P. Letha